

अंक 30वां सितंबर 2019

चेतना



“लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा”
“Dedicated to Truth and Public Interest”



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हैं (बायें से दायें) श्रीमती मणि के, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
श्री अभिषेक सिंह, उप महालेखाकार (लेखा, वी. एल. सी. एवं कार्य),
श्री अरूण मिंज, उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि)।

खड़े हैं (बायें से दायें) मो० हाशिम अंसारी, व. ले. अ. -सह-प्रधान संपादक,
श्री श्रीराम पाण्डेय, स. ले. अ. -सह-संपादक,
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा, स. ले. अ. -सह-सहायक संपादक,
श्री जॉर्ज सैमूएल, सचिव एवं
श्री पवन कुमार, स. ले. अ. (तदर्थ) -सह-सहायक संपादक।

चेतना परिवार

संरक्षक

श्रीमती मणि के
महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति,

श्री अभिषेक सिंह,
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री अरुण मिंज,
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक
मो० हाशिम अंसारी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सम्पादक,
श्री श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक
श्री पवन कुमार,
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक
श्री सुरेन्द्र दूबे,
लेखाकार

चेतना

अनुक्रमणिका

क्र०सं०

1	चेतना परिवार	ii
2	अनुक्रमणिका	iii
3	महालेखाकार का संदेश	v
4	उप महालेखाकार (लेखा, भी० एल० सी० एवं कार्य) का संदेश	vi
5	उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि) का संदेश	vii
6	सम्पादकीय	viii
7	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ वर्ष 2018-19	ix

क्रम सं०	रचना	नाम	पदनाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ सं०
1.	माँ	अर्चना	व०ले०	कविता	1
2.	आत्मदर्शन	संजय कु० ओझा	व०ले०	अध्यात्मिक लेख	4
3.	मन का मैल	श्रीराम पाण्डेय	स०ले०अ०	कहानी	11
4.	दोस्त की पोशाक	ऋषव माँझी पिता- सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	कहानी	14
5.	चोर की सच्चाई	धीरज कुमार	व०ले०	कहानी	15
6.	अपनो में परायापन	मो० हाशिम अंसारी	व० ले० अ०	कविता	16
7.	जैसा अन्न वैसा मन	देव प्रकाश केसरी	व०ले०	कहानी	17
8.	उलझन	ऋषव माँझी पिता- सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	कविता	18
9.	इंतजार	आभा झा	स०ले०अ०	कविता	19
10.	यह उन दिनों की बात है	मुरली मनोहर झा	स०ले०अ०	संस्मरण	20
11.	हमारा देश	लक्की कुमार पिता- सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	कविता	22

क्रम सं०	रचना	नाम	पदनाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ सं०
12.	तेरा ही दीवाना	राम सिंगार चौहान	स०ले०अ०	कविता	23
13.	जीवन का मूल्य	ज्योति केसरी, पत्नी- देव प्रकाश केसरी	व०ले०	कहानी	25
14.	व्यवहार	लक्की कुमार पिता- सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	कहानी	26
15.	विश्व भाषा के रूप में हिंदी	धीरज कुमार	व०ले०	लेख	27
16.	गजल	आफताब अंसारी	व०ले०	गजल	29
17.	दिल ए नादान	संजय कु० ओझा	व०ले०	गजल	30
18.	जूते की खोज	ज्योति केसरी, पत्नी- देव प्रकाश केसरी	व०ले०	कहानी	31
19.	न रहेंगे कल	राम सिंगार चौहान	स०ले०अ०	कविता	32
20.	तौहफा कबूल नहीं	सुमन संगम	व०ले०	कहानी	34
21.	पापा	शादाब, पिता- आफताब अंसारी	व०ले०	कविता	36
22.	स्वच्छता एवं स्वच्छ परिवेश	देव प्रकाश केसरी	व०ले०	लेख	37
23.	मुस्कुराना धर्म	नायला समरीन, पिता-आफताब अंसारी	व०ले०	कविता	39
24.	सवांनवां में न जबई ननदी	बनवारी सिंह	ले० सह केयरटेकर	कजरी	41
25.	अधूरी यात्रा	सूरज कु० वर्मा	व०ले०	संस्मरण	42
26.	आशीष और कामना	जयप्रकाश	ले०अ०	यादें	44
27.	यादें	शिवशंकर तिवारी	व०ले०	कविता	46
28.	स्नेह बाँट मिट जाऊँ	पूर्णन्दु कुमार झा	स० ले० अ०	कविता	48



संदेश

मुझे हार्दिक खुशी है कि इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' अविलम्ब अपने तीसरे अंक में प्रकाशित होने जा रही है। यह पत्रिका हिन्दी के प्रति निष्ठा का एक सुन्दर उदाहरण है। आज हिन्दी देश की राजभाषा के रूप में समस्त देश को एकता की कड़ी में पिरोने का कार्य कर रही है। 'चेतना' भी देश को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करेगी, यही मेरी मंगल कामना है। वस्तुतः हिन्दी के सर्वांगीण विकास के लिए राजकाज में, सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करना हम सबका कर्तव्य है।

पत्रिका के प्रकाशन और सम्पादन से जुड़े हुए सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि हमारे कार्यालय के सभी लोग राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा करते रहेंगे। 'चेतना' प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

मणि

मणि के

महालेखाकार (ले० व ह०)
बिहार, पटना।



संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के तीसवें अंक का शीघ्र प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका हिन्दी के विकास में, एक सराहनीय कदम है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए चेतना परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। उन्हें मेरी हार्दिक बधाई। आशा है, सरकारी कामकाज में हिन्दी को इससे प्रोत्साहन मिलेगा और हमलोग अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करके इसके विकास में अपना योगदान देंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं सतत प्रकाशन हेतु विपुल शुभकामनाएँ!

अभिषेक सिंह

अभिषेक सिंह,
उप महालेखाकार
(लेखा, भी0एल0सी0एवं कार्य)



सत्यमेव जयते



संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के तीसवें अंक के प्रकाशन से मुझे अतिशय प्रसन्नता हो रही है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ स्तरीय, ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए यह प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के संपादक मंडल, सभी रचनाकार एवं प्रकाशन से जुड़े लोग बधाई के पात्र हैं। उन सबों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पत्रिका की अविरल प्रगति एवं अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी बहुत-बहुत मंगल कामनाएँ!

अरुण मिंज

उप महालेखाकार
(पेंशन एवं निधि)



हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 30वें अंक को हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि सहित जागरूकता लाने एवं इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के प्रचार एवं विकास के लिए सतत् प्रयत्न हो रहा है। तीव्र गति से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप से डालनी पड़ेगी।

आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर यह संकल्प लेना होगा कि सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में ही किये जायेंगे। साथ ही हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर की जायेगी।

इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध एवं कविता इत्यादि प्रत्येक माह नियमित रूप से हिन्दी कक्ष को देते रहेंगे, ताकि पत्रिका अपने त्रैमासिक लक्ष्य को प्राप्त कर सके और पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकें।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव बेहिचक सूचित करेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचना से इसे सुशोभित करने की कृपा करेंगे।

अंत में अपने संरक्षक माननीया महालेखाकार श्रीमती मणि के तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशित हो पा रही है। पत्रिका में सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय रही है। उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद! पत्रिका में त्रुटि नहीं हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है, तथापि यदि कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए क्षमा याचना है। इसके लिए विज्ञ पाठकगण मार्ग दर्शन कराने का अनुग्रह करेंगे। अपनी ओर से सभी पाठकों और रचनाकारों को पुनः बधाई, साधुवाद।

जय हिन्द, जय हिन्दी ।

श्रीराम पाण्डेय
(संपादक)।

पुरस्कार वितरण (वर्ष-2018)

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्र. सं.	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों के नाम
1	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	नसीम अहमद (व० लेखाकार), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	श्री अविनाश कुमार ठाकुर(स०ले०अ०), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	श्री मो०दानीश (क०अनुवादक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
2	प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण	प्रथम	श्री अंजनी कुमार (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	स्व०आशीष कुमार (स०ले०अ०), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	श्री अविनाश कुमार ठाकुर(स०ले०अ०), (ले० एवं ह०) कार्यालय
3	बच्चों का काव्य पाठ	प्रथम	प्राची श्री, पुत्री-श्रीमती नीतु कुमारी (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	अराध्या सिंह पुत्री-श्रीमती नीतु कुमारी (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	अदिति पुत्री- श्री अविनाश कुमार ठाकुर (स०ले०अ०), (ले० एवं ह०) कार्यालय
4	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	प्रथम	शंकर लाल सिंह (व० लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		द्वितीय	रंजय कुमार शर्मा (एम०टी०एस), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री देव प्रकाश केशरी (व० लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
5	स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	प्रथम	श्री भुवन भास्कर (व०ले०प०अ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री राम सिंगार चौहान(स०ले०अ० तदर्थ) (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	श्री विश्वपति सिंह (स०ले०प०अ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
6	हिंदी भाषण प्रतियोगिता	प्रथम	श्री मो०दानीश (क०अनुवादक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	स्व०आशीष कुमार(स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	श्री कुमार शैलेन्द्र चंद (स०ले०प०अ०) (लेखापरीक्षा कार्यालय)



कार्यालय, महालेखाकार (ले० व ह०), बिहार, पटना। हिन्दी गतिविधियाँ-2018-19

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नांकित है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन:

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत वर्ष 2018-19 में कुल 2231 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें सभी हिन्दी/द्विभाषी में जारी किए गये। अंग्रेजी में जारी किए गये दस्तावेजों की संख्या शून्य रही।

2 हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2018-19 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,16,697 थी, जिनमें से 69,150 के उत्तर हिन्दी में दिए गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा हिन्दी में भेजे गये पत्रों की प्रतिशतता 100 प्रतिशत रही।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

वर्ष 2018-19 में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया। अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4 हिन्दी कार्यशाला:

वर्ष 2018-19 के दौरान इस कार्यालय में 4 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं, जिनमें कार्यालय के 67 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5 हिन्दी पुरस्कार योजना:

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2018-19 के दौरान मूल हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी दिवस के अवसर पर नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

6 हिन्दी-पखवारा समारोह का आयोजन:

वर्ष 2018 में 01 सितम्बर, 2018 से 14 सितम्बर 2018 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत् आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-निबंध-प्रतियोगिता, प्रारूप-लेखन एवं संक्षेपण प्रतियोगिता, इत्यादि आयोजित की गयी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले

प्रतिभागियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य पर पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

7 हिन्दी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 115 अधिकारी एवं 566 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। यहाँ 11 टंकक तथा 57 डाटा एंट्री ऑपरेटर हैं, जिनमें 7 डाटा एंट्री ऑपरेटर प्रशिक्षण के लिए शेष हैं।

8 हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2018-19 के दौरान इस कार्यालय में कुल 50,385 संचिकाएँ खोली गईं, जिनमें 49,924 संचिकाओं में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गईं।

इस प्रकार इस कार्यालय द्वारा कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतर लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है, जिसकी समीक्षा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में की जाती रही है। आशा है, आगामी सत्र में भी लक्ष्यों की पूर्ति शत-प्रतिशत की जा सकेगी।





अर्चना
(व० ले०)

|| “ माँ ” ||

तेरे आँचल के छाँव में,
तेरे ममता के गाँव में,
मैं कुछ पल ही ठहर पाई,
उन्हीं थोड़े पलों से माँ,
ढेरो सौगात संग लाई।
मुझमें जो थोड़ी अच्छाई है,
तेरे ही संगत से आई है।
काश कि कुछ पल और ठहरती,
मैं भी थोड़ा और निखरती।
नन्हें नन्हें पाँव में,
तेरे दामन के पड़ाव में,
मैं कुछ पल ही थिरक पाई,
उन्हीं पलों से माँ,
ढेरो सुर ताल सजा लाई।
ये जो मुझमें मैं रहती हूँ,
बस तेरी ही बातें कहती हूँ।
तू थी मुझसे दूर सही,
मैं तो हर पल तेरे पास रही।
माना मैं नादान थी,
तुझसे कहाँ अंजान थी।
जीवन के हर मोड़ पर माँ,
आशा और निराशा है।

११३



जीवन के हर रूप की माँ,
तू ही तू परिभाषा है।
अंबर कि ऊँचाई जैसी,
तेरे मेरे रिश्ते कि गहराई ऐसी।
ओर नहीं, कोई छोर नहीं,
तुझसे होकर गुजरे ना माँ,
ऐसा कोई मोड़ नहीं।
ये भाव जो मुझमे गहरे हैं,
तुझसे अनकही बातों के पहरे हैं।
मेरी पहली चाहत है तू,
मेरी बेचैनियों में राहत है तू।
काश कि तुझसे कह पाती,
कुछ पल मेरे पास बिताती।
बेटी और माँ के इस मोड़ पर माँ,
आज मैं तुझको जी रही,
मिली नहीं थी तुझसे यूँ,
आज मैं तुझसे मिल रही।
शून्य भी तू संसार भी तू,
इस जीवन का आधार भी तू।
विरान ये दुनिया तेरे बिन माँ,
अंत भी तू संचार भी तू,
क्या कहूँ और क्या छोड़ूँ माँ,
सार भी तू विस्तार भी तू।
भ्रममयी इस दुनिया में माँ,
बस तू ही एक सच्चाई है।
पास नहीं तू पर बनकर आसमाँ,
मेरे पल-पल पर छाई है।



तुझको खुद में पिरो सके माँ,
शब्दों में ऐसी औकात कहाँ,
जन्नत से बढ़कर है गोद तेरी माँ,
कदमों में तेरे सारा जहाँ।
तू मुझसे और मैं तुझसे
हो गई पूरी सी,
पर तुझपर लिखी मेरी रचना,
अब भी है अधूरी सी।
अपने हर किरदार को माँ,
काश मैं तुझसा ही निभाती,
औरों की मैं ना जानूँ,
मैं तो खुद से खुश हो जाती।
स्नेह,साहस,समर्पण और त्याग की माँ
बस तू ही एक मिशाल है,
“माँ” तुझको पाकर,
ये जीवन हुआ निहाल है।



४४



आर्यावर्त में मानव सभ्यता के आरंभ के साथ ही सनातन धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। वस्तुतः सनातन धर्म मानव जीवन को जीने की पूर्ण कला सिखलाता है। यह ब्रह्मांड में जैव-अजैव स्रोतों में विद्यमान ऊर्जा को मानवसुलभ बनाने की राह दिखाता है। यह जीव को ब्रह्म से एकाकार करने के लिए योग एवं साधना की युक्ति एवं उसके महत्व को रेखांकित करता है। यह तपचर्या के द्वारा इंद्रिय निग्रह करने, पर्यावरण संपोषण हेतु वृक्षों में भी जीवन के विद्यमान होने की अनुभूति प्रदान करता है। श्लोक 'पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः, सर्वे शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि' की यह ध्वनि प्रकृति के सभी निकायों में संतुलन और शान्ति की अपेक्षा रखता है। ध्वनि एक ऊर्जा है जो कार्यक्षम है। इसलिए ऐसे ध्वनिक्रमों से उत्पन्न ऊर्जा निश्चित रूप से हमारे चारों ओर सकारात्मक वातावरण उत्पन्न करता है। मन में आदर्श विचार संपूरित करता है। संक्षेप में, हमारा सनातन धर्म प्रकृति तत्वों के साथ मानवजीवन का नियामक है। अपनी इस भूमिका को चिरस्थायी रखने के लिए इसने मानव सभ्यता को उपहार स्वरूप कुछ ग्रंथ प्रदान किए हैं। इन ग्रंथों में चार वेद यथा-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद तथा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद और निरुक्त— ये छः वेदांग हैं। वेदार्थ ज्ञान में सहायक शास्त्र को ही वेदांग कहा जाता है। वेदांगों के भाग के रूप में उपनिषद होते हैं, जिनकी संख्या सैकड़ों है परन्तु उनमें से कुछ उपनिषद यथानाम—कठोपनिषद, तैत्तिरीयोपनिषद, छांदोग्योपनिषद आदि प्रमुख हैं। ये उपनिषद (आरण्यक) जंगलों में साधना—तपस्यारत ऋषि—मुनियों के सानिध्य में रहने वाले हमारे मेधावी पूर्वजों के द्वारा श्रवण (श्रुति) किया गया और उसे स्मरण (स्मृति) के आधार पर अपने संततियों को उनके कल्याण हेतु उपख्याति किया गया। अठारह पुराण भी इसी भाव से विभिन्न कालखंडों में लिपिबद्ध किए गए हैं। इन्हीं पुराणों से उद्भूत हुआ भगवान श्रीकृष्ण के आप्त वचन 'श्रीमद्भागवतगीता' जिसकी प्रसांगिकता हर युग में शाश्वत रहा है। गीता को जितनी बार पढ़ा जाए, जीवन और भी अधिक सूक्ष्मता से दृष्टिगोचर होने लगती है। विभिन्न कालखंडों में युग की अवधारणा के अनुसार तत्कालीन विद्वानों यथा शंकराचार्य, रामानुज और बाल गंगाधर तिलक आदि द्वारा लिखे गए गीता भाष्य के अद्योपान्त अध्ययन और मनन से मनुष्य की अधोवृत्तियाँ स्वतः लुप्त होने लगती है।

भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन से कहा था कि हे पार्थ! मेरे वर्तमान जीवन से पहले के



100 + 100 + 100 = 380

सभी जन्म मुझे याद हैं जबकि तुम अपने पूर्वजन्मों को भूल चुके हो। युद्ध के अभिलाषा रखने वाले यहाँ एकत्र सभी योद्धा ऐसा नहीं कि पहले नहीं थे या बाद में नहीं रहेंगे। सभी थे, हैं और रहेंगे। नष्ट तो सिर्फ स्थूल शरीर होता है, आत्मा तो अमर है। तुम व्यर्थ शोक मत करो बल्कि धर्म के अनुसार आचरण करते हुए वीरोचित कर्म करो। यही कर्म योग है। गीता को गुरुग्रंथ मानने वालों के लिए यह इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य का पुनर्जन्म होता है यानी पुनर्पिजननम् पुनर्पिमरणम्। मनुष्य के पूर्व जन्म के संचित पाप-पुण्य कर्मों के अनुसार ही वर्तमान जीवन में मनुष्य की वृत्ति/प्रवृत्ति होती है और तदनुसार वह सुख-दुख भोगता है। चूँकि पूर्व जन्म के कर्म ही प्रारब्ध के आधार हैं, इसलिए किसी जातक के जन्म एवं जन्मोत्तर काल की सभी महत्वपूर्ण घटनाएँ पूर्व निर्धारित होती हैं। पाप पुण्य जनित जीवन की आधारभूत बातों में परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् यानी परोपकार से बड़ा कोई पुण्य नहीं और दूसरों को सताने से बड़ा कोई पाप नहीं। जैसे किसी कैदी के कारावास के दौरान आचरण के आधार पर उसकी सजा कम कर दी जाती है, उसी तरह वर्तमान जीवन के पुण्य पूर्व जन्मों के पाप के भार को कम कर सकता है। जहाँ सुमति तहाँ संपत्ति नाना और जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति निधाना। इसलिए वह परमेश्वर हमारी बुद्धि को हमेशा सद्विचारों से प्रेरित करे यही गायत्री मंत्र का भावार्थ है।

कुछ घटनाएँ तो स्वयं के घटने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ भी स्वयं ही उत्पन्न कर लेती हैं। इस संबंध में एक क्षेपक है कि जब दो ग्रह अर्थात् गुरु और शुक्र सहचर या एक दूसरे पर पूर्ण दृष्टिपात करते हैं तभी विवाह हेतु शुभ लग्न मूहूर्त का निर्माण होता है। किसी बर-कन्या का विवाह एक बार बिना लग्न मूहूर्त के ही तय कर दिया गया था। यह देखकर बृहस्पति को बहुत विस्मय हुआ और इस बात की समीक्षा करने वह शुक्र के समीप चले गए। शुक्र के साथ वार्तालाप में बृहस्पति ने कहा कि यह विवाह बिना मूहूर्त के कैसे संपन्न हो सकता है जबकि हम दोनों अपारंपरिक स्थिति में हैं। इस पर शुक्र ने गुरु से कहा कि यह तो ठीक है पर आप स्वयं मेरे पास आ गए और संप्रति हम दोनों साथ-साथ ही हैं फिर तो विवाह मूहूर्त स्वयं ही बना समझो। यह दृष्टांत मात्र उपरोक्त पंक्ति के संपुष्टि के लिए लोक चर्चित है। पर ऐसा भी होता है कि जब आग लगती है तो हवा तेज चलने लगती है जो स्वयंसिद्ध है। दहन के लिए सहायक तत्व के रूप में आक्सीजन के निर्बाध आपूर्ति हेतु हवा का आग की ओर दौड़ना एक नैसर्गिक प्रक्रिया है। दो घटनाएँ अधिकांशतः पूरक होती हैं। किसी सुसाध्य कार्य के शुभ शकुन होते हैं जबकि अशुभ शकुन वांछित परिणाम नहीं देता है।

मैं जब कभी अपने जीवनमार्ग पर चलते हुए थक कर निराश होता हूँ, मुखमंडल पर विकृति के भाव उभरते हैं तब आत्म दर्शन के लिए मेरी दृष्टि स्वतः मेरी हथेली की रेखाओं पर जा टिकती है

करतल की जटिल रेखाओं में छिपा मैं अपना प्रारब्ध खोजता हूँ। आशाएँ जगती हैं और जीवन यात्रा फिर से शुरू हो जाती है। कभी कभार अपने कुंडली का विश्लेषण करते हुए इस बात की वेदना जरूर होती है कि काश अमुक ग्रह अमुक ग्रह के साथ संयुग्मित होकर अमुक भाव में होकर अमुक योग बनाता जिससे मेरा प्रारब्ध अभीष्ट स्तर का होता। अपने अल्प ज्ञान से जीवन की पहेलियों को सुलझाने की कोशिश करता हुआ मैं कितना सफल या असफल होता हूँ यह मुझे नहीं पता पर मन को शांति अवश्य मिलती है। कुछ स्थितियों में ज्योतिष के आधार पर की गई भविष्यवाणियों की सटीकता मुझे अचंभित भी करती है। इससे मैं यह समझता हूँ कि भावी घटनाएँ ज्योतिष ज्ञान चक्षु के दृश्य-परास में होती हैं जिनको जान-समझकर यथासाध्य प्रतिरोधी उपचार किए जा सकते हैं। यदि अखिल विश्व नास्त्रेदमस जैसे भविष्यवेत्ताओं के भविष्यवाणियों के प्रति संवेदनशील हो सकता है तो हम अपने ही भविष्यज्ञान तंत्र की उपेक्षा क्यों करें?

दुर्भाग्यवश, ज्योतिष के नाम पर अपना ब्यापार चलाने वाले समाज के तथाकथित बाबाओं के द्वारा जिस तरह लोगों को भटकाया जाता है, उससे ज्योतिष विज्ञान के प्रति लोगों के मन में संदेह उत्पन्न होना स्वभाविक ही है। ज्योतिष का विपणन करने वाले एक बाबा के अनुसार एक कन्या की जन्म कुंडली में कन्या राशि में बैठा-शुक्र-ग्रह नीच का है, जिसके कारण इसके विवाह में विलम्ब हो रहा था। वास्तव में, कन्या राशि का स्वामी ग्रह बुध शुक्र के साथ-साथ बैठा लक्ष्मी नारायण योग बना रहा है और साथ ही नीचभंगराज योग का भी निर्माण हो रहा है जो परिणय संबंधों में सुख की पराकाष्ठा है। वहाँ कुंडली के सातवें भाव में ग्रहों की स्थिति देखने के साथ उसके नवमांश कुंडली पर भी एक नजर डाला जाना चाहिए था। वस्तुतः स्त्री जातकों के लिए परिणय ग्रह का कारक वृहस्पति है, जिसकी स्थिति अनुसार परिणय संबंधी व्याख्या समीचीन था। परन्तु नीम हकीम बाबा के कथन ज्योतिष के सामान्य सिद्धान्तों से असंगत प्रतीत हो रहे थे।

ज्योतिष में मौलिक तत्वों से परिचित होना ही इस प्रस्तुति का उद्देश्य है। ज्योतिष जो काल ज्ञान की विद्या है, ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित है। आज भी हम पूर्ण शुद्धता के साथ सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण और अन्य भावी खगोलीय घटनाओं की गणना करते हैं जो ज्योतिष के निरपवाद रूप से यथार्थ होने का प्रमाण है। आर्यावर्त के मनीषियों के शोध और अनुभव के आधार पर ज्योतिष के प्रतिपादित सिद्धान्त की सही व्याख्या से ही ज्योतिष के सही स्वरूप से हम परिचित हो सकते हैं। ज्योतिष निःसंदेह एक विज्ञान है, क्योंकि इसके निष्कर्ष गणितीय संक्रियाओं पर आधारित एक प्रमेय होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास हनुमान चालीसा में सूर्य की दूरी के संबंध में लिखते हैं कि 'जुग(12,000)

$$100 + 100 + 100 + 100 + 36 = 336$$

सहस्र(1,000) योजन(4कोस यानी 13किमी) पर भानू, यानी उनके अनुसार पृथ्वी से सूर्य की दूरी लगभग 15 करोड़ किमी है जो आज के वैज्ञानिक गणना के हिसाब के लगभग बराबर है।

यदि पृथ्वी को एक स्थिर आकाशीय पिंड मानते हुए इसके चतुर्दिक आकाश को बारह भागों में समभाजित किया जाय तो प्रत्येक भाग 30 डिग्री के होते हैं जिनमें से प्रत्येक भाग को एक राशि (Zodiac) कहा जाता है जिनके नाम क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन हैं। जातक के जन्म समय में चंद्रमा जिस राशि में विद्यमान होता है वही उस जातक की राशि होती है। अन्य राशियों में शेष आठ ग्रह यथा सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु अपनी स्थिति के अनुसार जातक के जीवन पर शुभाशुभ प्रभाव डालते हैं। इन नौ ग्रहों के अलग-अलग या समूहों में होकर बारह भावों (राशियों) में उपस्थित होने का क्रमचय-संचय 100 करोड़ से अधिक होती है। एक चेसबोर्ड पर किसी एक मोहरे की चाल से कितनी नई स्थितियाँ / संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं, इसका आकलन एक कंप्यूटर भी पूर्ण रूप से नहीं कर पाता है।

वैसे जब ज्योतिष शास्त्र में पृथ्वी को स्थिर माना जाता है तो यथार्थ से हम स्वयं ही परे चले जाते हैं क्योंकि पृथ्वी तो वास्तव में गतिशील है। इसका समाधान इस रहस्य में छिपा है कि विराम के स्थिति में रेलगाड़ी में सवार किसी यात्री को पार्श्वस्थ किसी रेलगाड़ी के गतिशील होने की स्थिति में स्वयं की रेलगाड़ी गतिशील प्रतीत होती है। यही स्थिति सूर्य के सापेक्ष पृथ्वी के गति की भी है। सापेक्षिक गति के निर्धारण में सुविधा के लिए किसी गतिशील निक्काय को भी स्थिर माना जाना तर्कसंगत है। विदित हो कि इस सौर मंडल को धारण करने वाली हमारी आकाशगंगा अपनी बढ़ती आकार के साथ स्वयं गतिशील है। एक गुब्बारे पर बिन्दुचिन्हों की दूरी फूलाये जाने पर गुब्बारे के बढ़ती आकार के साथ परस्पर बढ़ती जाती है। इसलिए ऐसी स्थिति में किसी अवलोकन की शुद्धता के लिए स्वयं को विराम में माना जाना नितान्त आवश्यक है।

आकाश में तारों को एक विशिष्ट आकार में संगुच्छित होने पर उन्हें नक्षत्र की संज्ञा दी जाती है। पश्चिमी सभ्यता में ऐसे नक्षत्रों (constellation) को उनके पार्थिव तत्वों से मिलते जुलते आकार के अनुसार नामकरण किया गया है यथा Orion, Ursa Major, Aurija इत्यादि। भारतीय ज्योतिष के अनुसार नक्षत्रों की संख्या 27 है जिनके नाम अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मार्गशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वा आषाढ, उत्तरा आषाढ, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषक, पूर्वा भाद्रपद, उत्तर

शद्रपद और रेवती हैं। विदित हो कि इन नक्षत्रों के नाम के आधार पर वर्ष के सभी बारह महीनों के नाम रखे गए हैं यथा अश्विनी के नाम पर अश्विन, कृतिका के नाम पर कार्तिक, श्रवणा के नाम पर सावन इत्यादि।

इसी तरह, ज्योतिष के अनुसार मानव जीवन के लिए अधिकतम 120 वर्ष निर्धारित हैं और इस अवधि में विभिन्न ग्रह एक निश्चित काल खंड के लिए व्यक्ति विशेष के ऊपर विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं जिन्हे ग्रहों की महादशा कहा जाता है। जैसे सूर्य की महादशा 6 वर्ष की होती है तो चंद्र की 10 वर्ष। मंगल की 7 वर्ष, बुध की 17 वर्ष, गुरु की 16 वर्ष, शुक्र की सर्वाधिक 20 वर्ष, शनि की 19 वर्ष, राहु की 18 वर्ष तथा केतु की 7 वर्ष की महादशा होती है। इनमें प्रत्येक ग्रह की महादशा में सभी 9 ग्रहों की समानुपातिक अवधि के लिए माहदशा में अन्तर्दशा एवं उसी तरह अन्तर्दशा में प्रत्यंतर दशा चलती है। कुछ स्थितियों में जातक के जन्म समय में कुछ ग्रहों की महादशा गर्भ में ही भुक्त हो जाती है।

आजकल सहजता से किसी को शनि ग्रह के दुष्प्रभाव के नाम पर कुंठित किया जाता है। आईए समझते हैं कि शनि की साढ़ेसाति वास्तव में क्या है। कल्पना करें कि शनि अभी यदि वृष राशि में हो तो यह एक राशि बाद यानी मिथुन राशि को ढाई साल प्रभाव में ले लेता है। फिर जब यह मिथुन में प्रवेश करता है तो इस पर इसका प्रभाव ढाई साल तक होता ही होता है। पुनः जब यह कर्क राशि में प्रवेश करता है तो भी मिथुन पर अपने प्रभाव ढाई साल तक रहता है। इस तरह मिथुन राशि पर शनि का प्रभाव कुल साढ़ेसात साल तक रहेगा। यह कहा जाए कि शनि का पूर्ववर्ती, समवर्ती एवं उत्तरवर्ती प्रभाव एक राशि पर कुल साढ़े सात साल तक होता है जिसे शनि की साढ़ेसाति कहते हैं। उसी तरह नौ ग्रहों में से किन्हीं आठ ग्रहों का जन्मांग चक्र के दोनो विकर्ण में से किसी एक विकर्ण के एक ओर ही समूहित होना कालसर्प योग कहलाता है। पुनः, रेवती, अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र में जन्में जातक परिवार एवं स्वयं के लिए अशुभकारी होते हैं पर विलक्षण भी। इसी कारण तुलसीदास के पिता ने उन्हें जन्म लेते ही उनकी माँ की मृत्यु के उपरान्त भावी संकट का विचार कर उनका परिव्याग कर दिया था। पुनः, प्रत्येक राशि में कुल सवा दो नक्षत्र एवं प्रत्येक राशि में तदनुपात 9 चरण होते हैं। चंद्रमा के किसी विशेष राशि में होना, फिर उसी राशि के किसी विशेष नक्षत्र में होना और फिर उस नक्षत्र के किसी विशेष चरण में चिह्नित होने के अनुसार जातक के नाम का प्रथम वर्ण/अक्षर निश्चित किया जाता है। यानी किसी नाम के प्रथम अक्षर से यह समझा जा सकता है कि जातक का जन्म किस राशि में, किस नक्षत्र में तथा उस नक्षत्र के किस चरण में हुआ है।



$$100 + 100 + 100 + 100 + 68 = 468$$

विज्ञान के अनुसार पृथ्वी के निर्माण और उसके पुनर्विन्यास के क्रम में सागरीय गड्ढों के द्रव्य (material) अंतरिक्ष में प्रक्षेपित हुए और लगभग 3,84,000 किमी की दूरी पर जाकर घनीभूत होकर चाँद के रूप में परिणत हो गए, यानी चंद्रमा मौलिक रूप से जलोद्भिद है। सूर्य हाइड्रोजन गैस का जलता हुआ एक तारा है। इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो अमावस्या को जन्मा जातक मानसिक रूप से सबल नहीं माना जाता, क्योंकि सूर्य और चंद्रमा उस दिन एक साथ होते हैं। सूर्य अग्नि तत्व है जबकि चंद्रमा एक जल तत्व। अग्नि से सहसंबंध के कारण जल का वाष्पीभूत होना स्वभाविक है। चंद्रमा मन का कारक है। **चंद्रमा मनसो जातः** यानी चंद्रमा कालपुरुष के मन से उत्पन्न हुआ है। चंद्रमा का वाष्पीभूत होकर प्रगलित होना यह संकेत करता है कि जातक का मानस उर्ध्वपातन (mental sublimation) की स्थिति में होगा।

इसी तरह सूर्य प्रत्येक राशि में एक माह तक संचरण करता हुआ अगले राशि में प्रवेश कर जाता है। सूर्य प्रति वर्ष 14 जनवरी को मकर राशि में प्रवेश करता है, जिसे मकर संक्रान्ति कहा जाता है। सूर्य इस दिन उत्तरायण हो जाता है जो कि प्रयाण के लिए एक अभीप्सित स्थिति है। इसीलिए महाभारत युद्धोपरान्त शरशैया पर पड़े गंगापुत्र भीष्म ने देहत्याग के लिए इसी दिन का चयन किया था। इस दिन को हमारे समाज में भीष्म के वार्षिक श्राद्ध कृत्य के रूप में अर्पित करने के लिए तिल का तिलकुट और पिंड के रूप में लाई-कसार आदि बनाने की प्रथा है। वैसे यह विरोधाभासी है कि इस अमांगलिक दिन को भी हमारे समाज के कुछ लोग हैप्पी मकर संक्रान्ति की शुभकामना भी देते हैं।

पृथ्वी जितने दिन में सूर्य की परिक्रमा करती है वह सौर वर्ष कहलाता है, जबकि चंद्रमा जितने दिन में पृथ्वी की बारह परिक्रमा करता है वह चंद्र वर्ष कहलाता है। हिन्दू पंचांग सूर्य और चंद्रमा दोनों के परिक्रमण काल में सामंजस्य बना कर बनाये जाते हैं। सौर वर्ष लगभग 365 दिन का होता है, जबकि चंद्र वर्ष 1.1 दिन कम यानी 354 दिन का होता है। इसी 11 दिन को तीन वर्षों पर एक अधिमास के रूप में अधिरोपित करते हुए तेरह महीने का एक वर्ष माना जाता है, जिसे अधिमास या मलमास कहते हैं। इस्लाम में पंचांग पूरी तरह चंद्र आधारित होते हैं और इसलिए उनके पंचांग सौर वर्ष में 11 दिन कम पड़ते हैं और परिणामस्वरूप उनके सभी पर्व हर साल पूर्व वर्ष से लगभग 11 दिन पहले मनाये जाते हैं।

बरूणा और असि नदी से अपना नाम प्राप्त करने वाला विश्व का सबसे पुराना शहर वाराणसी ज्योतिष विद्या के एक केन्द्र के रूप में अपनी संस्कृति को आज तक अक्षुण्ण रखे हुए है। गुप्तकाल में विश्व के महान खगोलविद आर्यभट्ट का जन्म बिहार के पटना के समीप तरेगना में होना हमारे लिए गर्व

की बात है जिन्होंने अपनी पुस्तक आर्यभट्टीयम् में ब्रह्मदत्त द्वारा संकल्पित शून्य के सिद्धान्त की व्याख्या किया। इनके नाम पर ही भारत का प्रथम कृत्रिम उपग्रह अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया। इसलिए हम बिहारवासियों के लिए ज्योतिष के क्षेत्र में पहचान बनाने की असीम संभावना है।

ज्योतिष के इस गणित और फलित के पृष्ठभूमि में हम इस बात का दावा कतई नहीं करते हैं कि हम अपने जीवन रूपी नाव को ज्योतिष रूपी पतवार से संचालित करें, बल्कि हम यथोचित कर्म करने में विश्वास करें जो भाग्य को ही बदल दे। ऐसा देखा जाता है कि मनुष्य के हाथ की रेखाओं में समय पर परिवर्तन होते रहते हैं, जो इस बात को परिलक्षित करता है कि कर्म से प्रारब्ध में परिवर्तन संभव है। अतएव, ज्योतिष को खुद से समझें ताकि किसी तथाकथित ज्योतिषविदों द्वारा हम प्रवंचना के शिकार नहीं हो सकें, भारतीय वांगमय में हमारी रूढ़ि बढ़े और हम अपने समृद्ध संस्कृति का प्रहरी बन सकें। अस्तु, ज्योतिष के प्रति हम यही आकांक्षा रखते हैं कि गुरुवत यह 'तमसो मां ज्योतिर्गमय' जैसे सुभाषितानि को पूर्ण चरितार्थ करें।

$$100 + 79 = 179$$





पुरानी और नई पीढ़ी के विचारों में अंतर, जिसे आज के लोग जेनरेशन गैप के नाम से जानते हैं और खुब इसकी चर्चा करते हैं, हमेशा रहा है और वह कभी खत्म नहीं होने वाला। हाँ, यह अलग बात है कि पुरानी पीढ़ी के लोग नये विचारों, रीति-रिवाजों से समझौता कर लेते हैं। पर श्रीधरजी मानते थे कि वे उनमें से नहीं हैं। 64

पूरी तरह से पुराने विचारों के आदमी थे और ऊपर से गाँव के रहने वाले। वर्तमान रीति-रिवाजों, रहन-सहन को जरा भी बर्दास्त नहीं कर पाते या यूँ कहें कि बर्दास्त करना ही नहीं चाहते थे। इस कारण वे हमेशा चिढ़े-चिढ़े से रहते थे। किसी नये चाल-चलन के आदमी, विशेषकर किसी महिला को देखते तो जल-भून के जैसे भूना आलू बन जाते। जिसे छूते ही हाथ या फिर खाते हुए जिह्वा जल जाय। उस गाँव के बड़े-बूढ़े तक कहा करते थे कि सब कुछ बदल जायेगा, पर इस सिरीधरवा के दकियानूसी विचारों में कभी कोई परिवर्तन नहीं होने वाला। परंतु परिवर्तन तो अवश्यंभावी है, कौन रोक सकता है उसे? 110

एक बात थी-गरीब-दीन-दुखियों के प्रति बहुत ही दया भाव रखते और बस यही बात उनके सामाजिक होने का आभास कराती थी। 22

एक बार की बात है कि श्रीधरजी के पड़ोसी परमेसर के यहाँ शहर से उनके जान-पहचान के एक मित्र की बेटी आई। संभवतः गाँव देखने आई होगी। मित्र बड़े रईस खानदान के थे, बल्कि रईस से ज्यादा धनी कहना सही होगा। एक तो करैला तीता, दूजे नीम चढ़ा, यह सोच श्रीधरजी की थी। परमेसर के मित्र की वही पुत्री एक दिन हाई हिल का सैंडल पहन कर घुमने निकली। 69

गाँव की ऊबड़-खाबड़ और बेतरतीब सड़क, जैसे ही वह सड़क पर आई, भहरा कर गिर गई। संयोग एवं उस वेचारी के दुर्भाग्य से उसी समय श्रीधरजी हाथ में लाठी ठक-ठकाते और पाँव में प्लास्टिक का जूता मचमचाते हुए अपनी पत्नी के साथ बगल से गुजर रहे थे। बस क्या था, मौका मिल गया और लगे ठहाका लगाने। एक तो गिरने से बेचारी को चोट लगी थी और ऊपर से इस ठहाके ने जले में नमक का काम किया। साथ ही धनी घराने की तो थी ही, बुजुर्गियत का खयाल किये बिना लगी गाली देने। 94

श्रीधरजी कहॉ बर्दास्त करने वाले थे। पत्नी के मना करते-करते भी दो-चार सोटा धर दिये। बच्ची रोती हुई सारी बात परमेसर को बता आई। फिर जो होना था, हुआ। खुब हुआ, दम भर हुआ। 36

दैव संयोग से श्रीधरजी के एक मित्र, विनय बाबू, जो शहर में रहते थे, ने अपने छोटे बेटे की शादी में उन्हें बुलावा भेजा। वे मन बना चुके थे कि चाहे जो हो, मैं नहीं जाऊँगा। यद्यपि दोनों दोस्तों में अत्यधिक आत्मीयता थी। श्रीधरजी के घर में जब भी कोई आयोजन-प्रयोजन होता, विनय बाबू अपने पूरे परिवार के साथ आते और कई दिनों तक रहते। जाते समय उलाहना देते हुए जाते कि तू न मेरी बेटी की शादी में आया, न बड़े बेटे की। अब यदि छोटे बेटे की शादी में नहीं आये तो फिर तुमसे सारे संबंध तोड़ लूँगा। वह मेरे शरीर

से अंतिम प्रयोजन होगा।

और उसी छोटे बेटे की शादी तय हो गई थी। श्रीधरजी न चाहते हुए भी पत्नी की जिद के आगे नतमस्तक हो गये। मित्र से घनिष्ठ आत्मियता होने के बाद भी अंदर से जरा भी इच्छा नहीं हो रही थी। शहर से चिढ़ तो थी ही। विनय बाबू की बड़ी बहू बहुत ही पढ़ी-लिखी थी एवं बैंक में नौकरी भी करती थी। श्रीधरजी के एक प्रयोजन में वह सास-ससुर के साथ उनके यहाँ आई थी। पर लगा जैसे उनके परिवार के साथ घुल-मिल नहीं सकी थी। सबसे कटी-कटी सी रहती। लगता था जैसे बैंक में नौकरी करने के घमंड ने उसे एकाकी बना दिया हो। एक बार वे विनय बाबू से बोल भी दिये, “क्या सोचकर बहू को परसंद किये थे।” विनय बाबू बस हँस भर दिये।

बहू वाली बात को याद करते ही मन खट्टा हो गया। अचानक सोच में विश्राम पड़ा। बस शहर पहुँच चुकी थी। पत्नी के साथ उतर गये। वही बैंक वाली बहू वहाँ खड़ी थी। उन्हें कार से लेने आई थी। मन और भी उखड़ गया—तो महारानी कार भी चलाती हैं। पैर छूने पर बेमन से आशीर्वाद देकर जल्दी से गाड़ी में पीछे जाकर बैठ गये। पत्नी को भी साथ में ही बिठा लिया। बहू कहती तो क्या कहती ?

विनय बाबू ने देखते ही उन्हें गले लगा लिया। लगभग दो वर्ष के बाद यह मित्र-मिलन हुआ था। दोनों की आँखें गिली हो गईं। कुछ देर के गप-सड़ाका के बाद वे नहाकर सोने चले गये। आँख लग रही थी कि तभी बहू चाय और नास्ता लेकर आ गई। थके तो थे ही, मन मसोसकर उठे और बोल ही दिया, “कुछ देर बाद ही ले आती तो क्या हो जाता ?” खैर, घर में खूब चहल-पहल एवं रौनक थी। मुआयना किया श्रीधरजी ने, फिजूलखर्ची में जो भी किया जा सकता था, सब किया गया था।

शाम में बारात निकली। एक गाड़ी में श्रीधरजी पत्नी को साथ लिये बैठ गये। रास्ते भर बाराती नाचते-ठुमकते रहे। और तो और, बड़ी बहू और सास अर्थात् विनय बाबू की पत्नी भी बारातियों संग नाचने में मगन थीं। धिक्कार भरी आँखों से पत्नी की ओर देखने लगे श्रीधरजी। मानो कह रहे हों कि यही सब दिखाने और देखने के लिये मुझे लाई हो ? पत्नी भी इशारों में ही समझाती, बस कल भर की तो बात है। अपने को संयत रखना ही ठीक होगा। घर से जनबासा एक-डेढ़ किलोमीटर होने के बावजूद शाम छः बजे की निकली बारात रात के दस बजे दरवाजे लगी। बीच में बैंक वाली बहू कई बार उन्हें और पत्नी को भी नाचने के लिये गाड़ी से उतरने को कहती रही, पर उनके उतरने का तो सवाल ही नहीं था, पत्नी को भी नहीं जाने दिया।

विनय बाबू के कहे अनुसार लड़की पक्ष वालों ने पूरी आवाभगत के साथ श्रीधरजी का स्वागत किया। पर रास्ते का छिछेरापन उन्हें अब भी संयत नहीं कर पाया था। खैर, द्वारपूजा आदि के बाद वरमाला होने लगी। सभी बारातियों-शारातियों के लिये बैठने एवं हर प्रकार के खानपान की व्यवस्था की गई थी, जैसा कि आजकल शहरों में हो रहा है। बिना उल्लास के श्रीधरजी एक किनारे सोफे पर बैठ गये। मित्र की पत्नी जबरन वरमाला के मंच पर बेटे-बहू को आशीर्वाद दिलाने ले गईं। कंजूसी की हद पार गये श्रीधरजी। सौ रुपये का एक मूड़ा-तूड़ा नोट नई बहू को दे जल्दी से मंच से उतर गये।

अनायास ही श्रीधरजी का ध्यान एक निर्धन-सी महिला की ओर चला गया। वह



शामियाने में एक किनारे दबी-सकुची उपेक्षित बैठी थी। देखने से लग रहा था, जैसे बहुत ही असहज महसूस कर रही हो। उसके पुराने एवं मैले कपड़े स्वतः उसकी गरीबी का प्रमाणपत्र दे रहे थे। उनका मन अब तो और भी उचाट हो गया—सब अपने में मगन हैं। इस गरीब को कौन पूछेगा? बिल्कुल द्रवित हो उठे थे वे। पता चला कि वह विनय बाबू के घर में काम करने वाली नौकरानी है। अब तो मन कर रहा था कि शामियाने से निकलकर वापस लौट जायें। पर पत्नी की ओर देखते ही संयत हो गये।

अचानक उनका ध्यान उस महिला की ओर फिर चला गया, जब उन्होंने देखा कि वही बैंक वाली बहू उसे घसीटते हुए उठ रही है। मन तो किया कि उन्हें और दो-चार सोंटा उस घमंडी को तो अब धर ही दें। जो होगा देखा जायेगा। पर यह क्या? बहू तो उसे मंच की ओर लिये जा रही थी। महिला हाथ जोड़कर मंच पर जाने से मना करती रही और बहू लगभग अपनी गोद में उठाते हुए उसे मंच पर लेकर चली गई। दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद देने के लिये जब बहू ने कहा तो उस गरीब की आँखें गंगा बहाने लगीं। मन गदगद हो गया श्रीधरजी का। इतनी अच्छी बहू मिली है साला इस विनइया को। अब उन्हें अपने आप पर क्रोध आ रहा था। क्यों इस बेचारी के प्रति इतना बुरा सोचते रहे, जबकि वह हमेशा उनके प्यार-स्नेह के लिये तरसती रही। भावुक और सरल मन वाले की आँखें भी बस वैसी ही होती हैं। निर्झरिणी बन गई बेचारी। अंकशायनी सबकुछ समझ चुकी थी—पल में तोला, पल में माशा।

विवाह का सारा रस्म पूरा हो चुका था। दूसरे दिन उन्हें पत्नी के साथ लौटना था। गाड़ी दरवाजे पर लग चुकी थी। परंतु श्रीधरजी उठ नहीं रहे थे। विनय बाबू ने चुटकी ली—अबे साले, पहले तो यहाँ आना ही नहीं चाहते थे, अब नहीं जाने का कोई बहाना ढूँढ रहे हो क्या? नहीं रे, बड़ी बहू कहीं नहीं दिख रही है। पत्नी धीरे से फुसफुसाई भी कि बेचारी लगातार भाग-दौड़ करने से थक कर सोई होगी। पर श्रीधरजी किसी की सुनते कहाँ थे। आँख मलती लगभग दौड़ती हुई बहू आई। सौरी चाचाजी, मुझे पता ही नहीं चला कि इतनी जल्दी आपलोग जा रहे हैं। एक-दो दिन रुक जाते तो कितना अच्छा होता।

नहीं बहू, जाना तो पड़ेगा ही। घर में बहुत काम है। तुम गाड़ी बहुत बढ़िया चलाती हो। मुझे बस स्टैंड तक छोड़ दोगी क्या? और बरबस उसका माथा चूम लिया था श्रीधरजी ने। पढ़ी-लिखी उस निर्बोध को यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसने ऐसा क्या कर दिया कि उखड़े-उखड़े से रहने वाले चाचाजी, जिनका स्नेह पाने के लिये वह हमेशा लालायित रहती थी, आज इतने प्रसन्न हो गये?





ऋषव मांझी
पिता का नाम -सत्येंद्र मांझी

|| दोस्त की पोशाक ||

एक बार नसीरुद्दीन अपने बहुत पुराने दोस्त ऋषव से मिला। अपने पुराने दोस्त से मिलकर वह बड़ा खुश हुआ। कुछ देर गपशप करने के बाद उसने कहा "चलो दोस्त, मोहल्ले में घूम आर्यें।"

ऋषव साहब ने जाने से मना कर दिया और कहा, "अपनी इस मामूली सी पोशाक में मैं लोगों से नहीं मिल सकता।" नसीरुद्दीन ने कहा, "बस इतनी सी बात!" नसीरुद्दीन तुरंत उसके लिए अपनी एक भड़कीली अचकन निकाल कर लाया और कहा, "इसे पहन लो, इसमें तुम खूब अच्छे लगोगे, और सब देखते रह जायेंगे। बनठन कर दोनों घूमने निकले। दोस्त को लेकर नसीरुद्दीन पड़ोसी के घर गया। नसीरुद्दीन ने पड़ोसी से कहा, "ये हैं मेरे खास दोस्त ऋषव साहब। आज कई सालों बाद इनसे मुलाकात हुई है। वैसे जो अचकन इन्होंने पहन रखी है, वह मेरी है।" यह सुनकर ऋषव साहब पर तो मानो घड़ों पानी पड़ गया। बाहर निकलते ही मुँह बनाकर उन्होंने नसीरुद्दीन से कहा-तुम्हारी कैसी अक्ल है! क्या यह बताना जरूरी था कि यह अचकन तुम्हारी है? तुम्हारा पड़ोसी सोच रहा होगा कि मेरे पास अपने कपड़े हैं ही नहीं। पर नसीरुद्दीन ने तो वही किया था, जो उसे करना था।

190





राघवपुर गाँव में मदन नाम का किसान रहता था। वह बहुत ही मेहनती था। उसने अपने खेत में गेहूँ की फसल बोयी। दिन-रात मेहनत करने के बावजूद वह इतना अनाज भी उगाने में सफल नहीं हो पाया कि राजा का लगान भी दे सके। वर्षा नहीं होने के कारण गाँव में अकाल पड़ गया। उसके घर में एक मुट्ठी अनाज तक नहीं बचा। दो रातों से वह तथा उसका परिवार भूखे पेट सो रहे थे। तीसरे दिन उसकी पत्नी बीमार पड़ गयी। अपने परिवार की दयनीय हालत देखकर वह चोरी करने निकल पड़ा। 123

उसने अपने पिता को यह वचन दिया था कि वह जीवन में कभी असत्य नहीं बोलेगा। वह चोरी करने के लिए गाँव के धनी सेठ रत्नाकर के भवन में घुस गया। उसने देखा कि सेठ तथा उसका परिवार गहरी नींद में सो रहे हैं तो वह तिजोरी खोलने लगा। खट-पट की आवाज़ सुनकर सेठ की नींद खुल गयी। सेठ जब तिजोरी की तरफ गया तो उसे एक काली छाया परदे के पास दिखायी दी। सेठ ने पूछा कि "कौन हो तुम?" छाया ने जवाब दिया, "मैं इसी गाँव में रहने वाला मदन किसान हूँ।" सेठ ने फिर पूछा कि तुम यहाँ क्या करने आए हो? छाया ने जवाब दिया - "मैं चोरी करने आया हूँ। मेरा परिवार भूख से मर रहा है। अगर मैं यहाँ से धन नहीं ले गया तो अपने परिवार को भोजन उपलब्ध नहीं करा पाऊँगा।" सेठ को उसकी बातों में छुपे दर्द का अहसास हुआ। साथ ही वह उसकी सच्चाई से प्रभावित हो गया। उसने कहा कि एक शर्त पर मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ। साथ ही तुम जो जेवर (धन) चुराने आए हो, वह भी तुम रख लो। इसके बदले तुम्हें मेरे यहाँ व्यवस्थापक के पद पर नौकरी करनी होगी। सौ स्वर्ण मुद्रायें तुम्हें वार्षिक मेहनताना दिये जायेंगे। मदन किसान ने सेठ के पैर पकड़ लिए। वह फुट-फुट कर रोने लगा साथ ही भविष्य में कभी चोरी नहीं करने का संकल्प लिया। 126

और दूर से देख रहे विधाता संसार की सबसे सुंदर इन दो कृतियों को बनाकर आनंदित हो रहे थे, पुलकि हो रहे थे। 22





मो० हाशिम अंसारी
वरीय लेखा अधिकारी

“परायों में अपनापन”

एक-एक कोना वहाँ का याद आता है
जो एक पल में ही पराया हो जाता है। 31
सुख-दुख सब बाँटे है उन दीवारों ने
थोड़ी हँसी थोड़ा आँसू वहाँ रह जाता है॥

परायों को भी अपनापन मुझे आता है
न जाने क्यों अपना ही पराया हो जाता है।
जीवन की कहानी भी कुछ अजीब है
एक ही पल में सुख, दुख हो जाता है॥ 32

मुझे पता था कि वो सब मेरा नहीं फिर भी
उस छत का कोना अब भी याद आता है।
कभी मन को बहलाना, कभी गर्मी से राहत पाना। 36
कभी चुपके से छिप जाना, याद आता है॥

वो सर्दी की धूप वो गर्मी की शाम
वो बारिश की ठंडक, वो मधुर संगीत। 28
कानों में बजता हुआ याद आता है
परायों में अपनापन, याद आता है॥

यहाँ भी वही मौसम है वही सबकुछ है
न जाने क्यों मेरा मन दुख जाता है।
कहें भी क्या और इससे अधिक, 29
अक्सर अपना ही पराया हो जाता है॥





एक बार एक महात्मा जी, अतिथि के तौर पर राजभवन पहुंचे। वहाँ के राजा ने उनका खूब आदर सत्कार किया और उन्हें भोजन कराया। भोजन करने के कुछ घंटों बाद ही महात्मा जी की मनोवृत्ति में अंतर आ गया और उन्होंने राजा का हार चुरा लिया। अब राजा धर्म संकट में पड़ गया कि महात्मा जी पर दोष कैसे लगाएं? ६०

काफी सोच विचार करने के बाद विद्वानों ने राय दी, "महाराज, अन्न का प्रभाव मन पर भी पड़ता है, हो सकता है कि राजकोष का यह अन्न ही दोषपूर्ण हो। इसलिए इसकी जांच कराई जाए। राजा ने अन्न की जांच कराई तो पाया कि जिस अन्न से महात्मा जी का भोजन बनाया गया था, एक चोर से बरामद किया गया था। तब राजा के समझ में आया कि महात्मा जी का व्यवहार ऐसा क्यों हो गया था।

अतः यह सिद्ध होता है की हमारी मानसिक चेतना और स्वस्थ भी वैसा ही हो जाता है, जैसा हम अन्न खाते हैं। यदि हमारा भोजन संतुलित नहीं है तो मन भी संतुलित नहीं होगा।



111





ऋषव मांझी
पिता का नाम -सत्येंद्र मांझी

उलझन

पापा कहते बनो डॉक्टर
माँ कहती इंजीनियर।

भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कंप्यूटर।

चाचा कहते बनो प्रोफेसर
चाची कहती अफसर।

दादी कहती आगे चलकर
बनना तुम कलेक्टर।

बाबा कहते फौज में जाकर
जग में नाम कमाओ।

दीदी कहती घर में रहकर
ही उद्योग लगाओ।

सबकी अलग-अलग अभिलाषा
सबका अपना-अपना नाता।

लेकिन मेरे मन की उलझन
कोई समझ नहीं पाता।

60



चेतना



श्रीमती आभा झा
द्वारा- अविनाश कु० ठाकुर
स०ले०अ०

||| “इंतजार” |||

नव-दस मास कोख में भरती,
असह्य प्रसव पीड़ा भी सहती,
नेह भरी ये अंखियाँ करती,
शिशु आगम का... इंतजार.... । 19

दिल का टुकड़ा दूर बसा है,
पल-पल साल सदृश लगता है,
तरस रही है माँ की ममता,
पुत्र मिलन का.... इंतजार..... । 21

परदेशी प्रियतम की नारी,
हर-क्षण हर-पल पंथ निहारी,
भीगी अलकें-पलकें भारी,
पिया मिलन का इंतजार..... । 15

बिछड़ गए हैं अरिजन-परिजन,
गोलु-गुड़िया, गृहणी, आंगन,
भोली बिटिया का वो चुम्बन,
आलिगंन का इंतजार..... । 15

मंद है धड़कन बेसुध काया,
अश्रुधारा संग बहती माया,
अब तो वक्त गमन का आया,
मात्र.... मृत्यु का..... इंतजार.... । 19

89





मुरली मनोहर झा
सहायक लेखा अधिकारी

|| यह उन दिनों की बात है ||

यह उन दिनों की बात है, जब मैं दरभंगा शहर में अपने अध्ययन के दौरान अन्तर स्नातक की पढ़ाई कर रहा था। प्रत्येक माँ-बाप की तरह मेरे माता पिता की भी इच्छा थी कि मैं मैट्रिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात विज्ञान संकाय से पढ़ाई करूँ, क्योंकि प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण छात्र यदि कॉमर्स अथवा कला संकाय से पढ़ाई करता है तो उसे गाँव में नालायक समझा जाता है। अतः अपने माता-पिता के इच्छानुसार, मैं भी दरभंगा आकर विज्ञान संकाय से अध्ययन प्रारंभ कर दिया। कुछ दिनों तक तो मैं मन लगाकर अध्ययनरत रहा, फिर मेरा संपर्क लॉज के सीनियर छात्रों से हुआ जो कहा करते थे “फ़र्स्ट ईयर इज रेस्ट ईयर एंड सेकेण्ड ईयर इज स्टडी ईयर”। फिर क्या था, मैंने भी अपने सीनियर के शब्दों का अक्षरशः पालन करना प्रारंभ कर दिया। अब कोचिंग जाने और मोटे-मोटे- नोट्स बनाने के अलावा सिर्फ एक ही जगह मिला करता और वो था चलचित्र भवन, कभी-कभी तो एक दिन में तीन शो, फ़र्स्ट शो तो समझिए बुक ही रहता था। वैसे कुछ दिनों के पश्चात ही यह एहसास हो गया था कि फ़र्स्ट शो तो समझिए बुक ही रहता था। वैसे कुछ दिनों के पश्चात ही यह एहसास हो गया था कि विज्ञान संकाय से मेरा दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है। परंतु हर विषय के प्रारंभ के ५ अध्याय बहुत गौर से पढ़ा। आज के दिन मैं मेरे सिवाय अन्तर स्नातक के मेरे सभी मित्र अभियंता हैं। खैर आज मैं जहाँ भी हूँ संतुष्ट हूँ। आज से कुछ दिन पहले मेरी पुरानी डायरी मेरी धर्मपत्नी के हाथ लग गयी, जिसमें उसने मेरे द्वारा लिखा हुआ एक प्रेम पत्र पढ़ा और मुझसे उसे “चेतना” पत्रिका में मुद्रित कराने का आग्रह किया। वो प्रेम पत्र कुछ इस प्रकार है-

प्यारी,

अ,ब,स, न जाने तुम किस तत्व कि बनी हो जो मेरे दिल को परमाणुओं की तरह तोड़ देती हो। मैं तुमसे कब से प्रणय निवेदन करना चाहता हूँ, लेकिन तुम एक निष्क्रिय गैस कि तरह ध्यान ही नहीं देती हो। मुझे समझ में नहीं आता है कि तुम्हारे दिल की आवर्त सारणी में अपना स्थान किस प्रकार बनाऊँ। तुम तो हीरे की तरह हो, इसमें कोई शक नहीं। पर कम से कम मेरे प्रेम के लिये अपनी कुचालकता को त्याग दो। देखो मेरे आँखों के विलय घोल को और उदासीन न बनाओ। तुम्हारा परवाना स्वतः श्वेत फास्फोरस की तरह जल जाना चाहता है। मैं अपनी साझेदारी तुम्हारे साथ करना चाहता हूँ, मेरे प्यार की जाँच तुम

संक्रमण, झारण, भंजन, निस्तापन इत्यादि क्रियाओं से कर सकती हो। मैं तुम्हारा नकारात्मक विलय प्रेमी हूँ। तुम्हारे आवर्त अदाओं को देखकर बहुतों ने मेरे प्रेम की क्रिया-प्रतिक्रिया में उत्प्रेरक की तरह भाग लिया है। मगर वो सभी गैंग (अयस्क में पाई जाने वाली अशुद्धि) से ज्यादा अहमियत नहीं रख सके। फेर भी तुम मुझे D-Block element समझती हो।

तुम्हारा प्रेमी
कखग

मैं अपने संपूर्ण अंतर स्नातकीय अध्ययन के दौरान इससे अधिक कुछ समझ नहीं पाया। योही मैंने अंतर स्नातकीय परीक्षा उत्तीर्ण की, विज्ञान संकाय को छोड़कर कला संकाय से स्नातक की डिग्री प्रारम्भ कर दी एवं रेलवे की तैयारी में दिलो जान से लग गया और अंततः मैं आप लोगों के बीच हूँ।



देश हमारा भारत प्यारा
दुनिया में सबसे न्यारा है।

इसमें जन्म लिया है हमने
यह सौभाग्य हमारा है।

उत्तर में है खड़ा हिमालय
यह नागराज हमारा है।

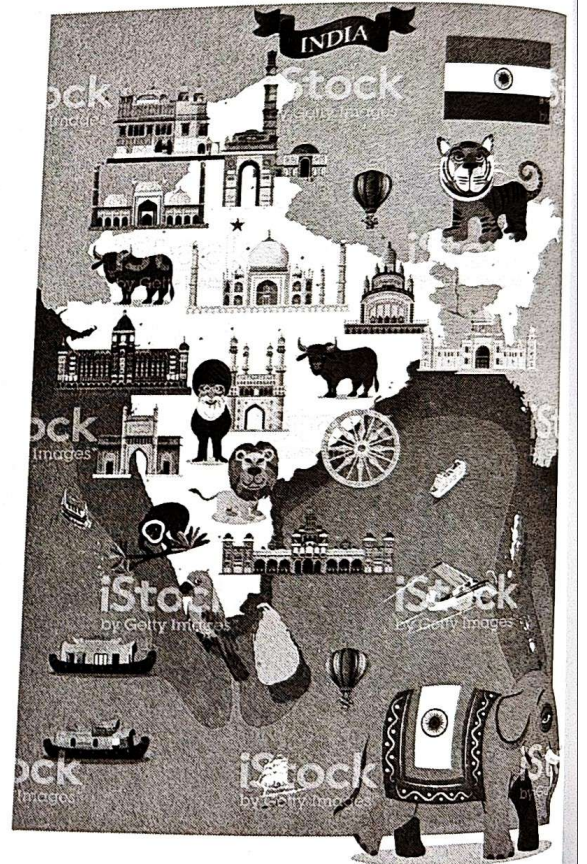
हम इसका यश गाएँगे
स्वर्णिम देश हमारा है।

यहाँ बहती है गंगा यमुना
कल कल करती पावन धारा है।

खेतों में हैं सोना बरसते हैं
उपजाऊ देश हमारा है।

अति महान अति भव्य पुरातन
गूँजता यह गान हमारा है।

कौन करेगा समता इसकी
महिमामय देश हमारा है।





राम सिंगार चौहान
सहायक लेखा अधिकारी

|| तेरा ही दीवाना ||

लाख समझाया, लाख समझाया
फिर भी नहीं माना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना
है मुश्किल बड़ा ही समझाना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना।

34

बेचैनी सी रहती हर पल
पल -पल जीते मरते पल -पल
पल -पल जीते मरते पल -पल
लगा रोग ये, लगा रोग ये कैसा पुराना 28
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना।

बाहर जाऊँ, या घर में रहूँ मैं
चुप रहूँ या तुम से कहूँ मैं
चुप रहूँ या तुम से कहूँ मैं
नहीं कोई है, नहीं कोई है
इसका ठिकाना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना।

36

आँखों मे तेरी, हल्का नशा है
दर्द ए-दिल अपना मज़ा है
दर्द ए-दिल अपना मज़ा है
जाये रोया ना, जाये रोया ना
ना ही मुस्कुराना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना।

32

तुम जो कहो रश्मि तोड़ूँ
साथ हो तुम तो, दुनिया छोड़ूँ
साथ हो तुम तो, दुनिया छोड़ूँ
प्यार क्या है, ये प्यार क्या है ये सब का सिखाना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना।

35

तुझको देखूँ तो आये करार मुझे
हर-पल तेरा क्यों रहे इंतजार मुझे
हर पल तेरा क्यों रहे इंतजार मुझे
दिल का तुझको मैं, दूँ नजराना
बड़ा मुश्किल है दिल को बहलाना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना।

37

तुम जो कहो तो चाँद तारे भी लाऊँ
फूल कली सब बहारे भी लाऊँ
फूल कली सब बहारे भी लाऊँ
दिल का तुझको मैं, दूँ नजराना
हो गया ये दिल, तेरा ही दीवाना।

31





सोनू अक्सर अपने माता-पिता से पूछता था कि दुनिया में सबसे कीमती चीज क्या है? कई दिनों के बाद पिताजी ने सोनू से कहा:- चलो आज एक सेमिनार में तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब मिल जाएगा। सोनू तुरंत ही पिता के साथ चल दिया। सेमिनार में एक वक्ता ने 2000 रुपए का नोट लहराते हुए अपनी बात शुरू की। वक्ता ने हॉल में बैठे सैकड़ों लोगों से पूछा, कोई यह 2000 का नोट लेना चाहता है?

अब लोगों के हाथ उठने शुरू हो गए। उसने नोट को देने से पहले लोगों से कहा कि मैं इस नोट के साथ कुछ करना चाहता हूं। फिर उसने नोट को अपनी मुट्ठी में लेकर कई जगह से मोड़ तोड़ दिया और फिर उसने पूछा, इस सेमिनार में अभी भी कोई है जो इस नोट को लेना चाहता है? अभी भी कई लोगों ने हाथ उठा दिए। उस वक्ता ने फिर कहा, अच्छा नोट को नीचे गिरा कर अपने पैरों से कुचल दूं तो, फिर भी क्या आप लोग इस 2000 रुपए के नोट को स्वीकार करोगे? उस पागल आदमी ने नोट को फिर कुचल दिया और नोट बिल्कुल गंदा हो गया था। उस आदमी ने फिर पूछा, क्या कोई इस नोट को लेना चाहता है?

कई लोगों ने फिर से हाथ उठा दिया, फिर उसने सभी लोगों से कहा-साथियों आपने आज एक बहुत महत्वपूर्ण सबक सीखा है। मैंने इस नोट के साथ इतना कुछ किया, फिर भी आप इस नोट को लेना चाहते हैं, क्योंकि यह सब होने के बावजूद भी नोट की कीमत नहीं घटी, उसका मूल्य अभी भी 2000 रुपए ही है।

इसी तरह से जीवन में हम कई बार गिरते हैं, हारते हैं। कई बार हमारे द्वारा लिए गए निर्णय हमें गिरा देते हैं। हमें ऐसा लगने लगता है कि इस जिंदगी में हमारा कोई मूल्य नहीं है। लेकिन एक बात को समझ लीजिए, जीवन में आपके साथ चाहे कुछ भी हुआ हो, या भविष्य में आपके साथ कुछ भी घटना घटित होने वाली हो। आपका मूल्य जिंदगी भर कम नहीं होता है।

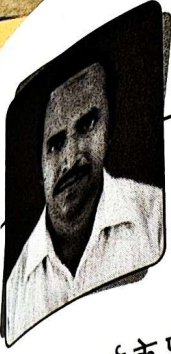


मेरे पड़ोस में दो विद्यार्थी रहते हैं, लक्की और अंकुश। लक्की जब भी मेरे पास आता है, पहले हाथ जोड़कर नमस्ते करता है, फिर चाचाजी कहकर मुझसे बात करता है। बड़े ही मृदुल और शांत स्वर में बोलता है। परंतु अंकुश दूसरी ही तरह से बात करता है। दूर से ही चिल्लाता हुआ आता है, मुन्नी के बाबूजी, आपको मेरे बाबूजी बुला रहे हैं। आस पास के सभी लोग लक्की की प्रशंसा करते नहीं थकते और अंकुश के व्यवहार पर हँसी आ जाती। यों तो अंकुश पढ़ने में तेज है और लक्की की अपेक्षा उसका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा है। फिर भी लोगों की प्रशंसा का पात्र लक्की ही है। इसका कारण है लक्की का बोल व्यवहार, जो लोगों का मन मोह लेता है। दूसरे शब्दों में कहें तो लक्की व्यवहार शिष्ट है, जबकि अंकुश अशिष्ट। अर्थात् व्यवहार कुशलता एवं शिष्टता सभी बुराइयों को परे धकेल देती है, जबकि अशिष्टता सभी अच्छाइयों को।



153





धीरज कुमार
(व० ले०)

|| विश्व भाषा के रूप में हिन्दी ||

भारतवर्ष के प्रत्येक भाषा की अपनी आन, बान, और शान है, किन्तु इन सब भाषाओं को जोड़ने वाली एक स्वर्णिम कड़ी है- हिन्दी। यदि हम भाषाओं के माध्यम से भारतवर्ष की एकता सुनिश्चित करना चाहते हैं तो हिन्दी के प्रति हमारे जो कर्तव्य हैं, इनको पूरा करने में एक नई तेजस्विता अपेक्षित है।

हमारे देश में विविधता में एकता है। आप भारत की सभी भाषाओं के स्वरूप को देखिये, वह अलग-अलग है। उनके बोलने की प्रक्रिया अलग-अलग है, लेकिन सभी भाषाओं में जो एक आत्मा है, वह भारतीय है। उसमें एक ही सुगंध है, वह है हमारी संस्कृति, सभ्यता और अस्मिता की। इसलिए हम विविधता में एकता की सशक्त मिसाल बनाए हुए हैं। यह सचमुच आश्चर्यजनक है कि हम एक अरब से ज्यादा भारतीय जिस हिन्दी को राजभाषा बनाने के प्रति उदासीन रहे, उसे सिंगापुर ने उत्साह से अपनाया है। वहाँ की कुल आबादी में यँ तो भारतियों की तादाद केवल ६% है, लेकिन फिर भी वहाँ हिन्दी का आकर्षण दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। सिंगापुर के युवा मानते हैं की हिन्दी भाषा संघर्षशील होती जा रही है। विश्व में अंग्रेजी, चीनी के साथ हिन्दी के प्रभाव में दिनोंदिन वृद्धि होती जा रही है। आज सोशल मीडिया के कारण हिन्दी का प्रयोग विश्व के विभिन्न लोग कर रहे हैं। पिछले कुछ दशकों में हिन्दी भाषा मनोरंजन की वैश्विक भाषा बनकर तेजी से विकसित हुई है, जिसका प्रमुख कारण हिन्दी भाषा की लालित्यपूर्ण अभिव्यक्ति है। इस प्रकार हिन्दी भाषा प्रेम के मर्म की भाषा बनकर प्रमुख रूप से गीतों के माध्यम से जनमानस के दिल की आकांक्षा को पूर्ण करने में सफल रही है। भारतीय फिल्मों विश्व के विभिन्न देशों के सिनेमाघरों में प्रदर्शित की जा रही हैं तथा अच्छा व्यवसाय भी कर रही हैं। हमारे यहाँ हॉलीवुड फिल्मों हिन्दी में डब कर रिलीज की जा रही हैं। इससे आभास होता है कि हिन्दी न सिर्फ लोक अभिव्यक्ति की भाषा है, बल्कि यह ऐसी भाषा है जिसे विश्व जनमानस ने अपने मन की भाषा के रूप में वर्षों से अपनाया हुआ है। हमने हिन्दी को आर्थिक क्षेत्र की सफल भाषा बनाने का प्रयत्न किया है।

विश्व के तमाम देश भी अपने यहाँ हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था किए हुए हैं, ताकि वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप हिन्दी में प्रशिक्षित युवाओं का इस्तेमाल किया जा सके। विश्व

की विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिन्दी का सॉफ्टवेयर तैयार कर रही हैं, ताकि भारत में वे अपना कारोबार सफलतापूर्वक कर सकें। बड़ी विदेशी कंपनियाँ भारत के बड़े बाज़ार को केंद्र में रखकर तेज़ी से निवेश कर रही हैं। ऐसे में ऐसी भाषानीति की आवश्यकता है जिसे हिन्दी अपनाने की अनिवार्य शर्त को भी भारत में निवेश करने वाली विदेशी कंपनियों के साथ जोड़ा जा सके, ताकि हिन्दी भाषी लोगों के समक्ष बेहतर कैरियर की संभावना उपस्थित हो सके। निश्चित ही इस कदम से वैश्वीकरण एवं हिन्दी की दूरी कम होगी तथा हिन्दी उन देशों, शहरों में भी हिन्दी भाषी युवाओं के माध्यम से पहुँचेंगी, जहाँ के लिए यह एक अनजान भाषा है।





हिन्दी पखवाड़ा समारोह- 2018 के उद्घाटन के शुभ अवसर पर माननीया महालेखाकार (ले० एवं हक०) दीप प्रज्वलित करती हुई।



स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर उप महालेखाकार (ले. प.) कार्यालय के कलाकार को सम्मानित करते हुए।



स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण कार्यक्रम का रसास्वादन करते हुए।



ज़ोर चला है आखिर किसका मनमौजी मतवालों पर,
अंकुश कौन लगा सकता है ख्वाबों और खयालों पर।

शर्मो हया की सारी हर्दें दिन में भी लाँघी जाती है,
सूरज खुद शर्मिदा है, अब इन तारीक उजालों पर।

बचपन में माँ,, प्यार से मेरा सर सहलाया करती थी,
लम्स का वो एहसास है ताजा अबतक मेरे बालों पर।

जी करता है, तोड़ के सारे, चाँद सितारे ले आऊँ,
आँसू जब बहने लगते हैं, नन्हें-मुन्ने गालों पर ।

पापा मम्मी , क्या एक दिन हम सारे भी मर जायेंगे?
आँसू भर आते हैं आफताब ऐसे मासूम सवालों पर।

94



न मेरा वजूद कोई, ना ही है पहचान मेरा।
न मौत का डर, न जीने का अरमान मेरा।।

धड़का दिल मेरा टूट कर बड़ी जोरों से।
लड़ता जख्म खाया है ये दिल के चोरों से।।

टूकड़े दिल का लेकर मैं हूँ घूमता ऐसा।
पारस मिल गया हो रंक को मानो जैसा।।

टूकड़े को पिरोकर माला मैं बनाता हूँ।
बेदर्दी प्रीत का तरन्नुम गुनगुनाता हूँ।।

डर है दिल मेरा जो फिर से जुड़ जाएगा।
प्रिय के याद में यह बहुत ही छटपटायगा।

जीना सीखा जिसने मौत की पनाहों में।
जीवन जी चुका महबूब की जो बांहों में।।

दर्द जितना भी उठ ले दिल में मेरे, है सुहाना।
अजब सी जिंदगी का है गजब मेरा फसाना।

हंसी में आंसू और रोने में हंसी आती है।
मौत मुझसे दूर हट कर खौफ खाती है।।

जिंदा लाश का यह दिल बड़ा बेमानी है।
दर्द सहने की आदत इसे बहुत पुरानी है।।

अपनी बेबसी पर शायद ही कोई इतराता है।
फलक रातों में हंसकर अशक ज्यों चुराता है।

टूकड़ा दिल का गूथूं मैं जितना साथ में।
टूटा दिल अदद में बढ़ती जाती हाथ में।

ऐ दिल न कोशिश जुड़ने की तू अब करना।
जिंदगी में बहुत मुश्किल है बार-बार मरना।

बिजलियाँ घर नहीं उसका जला पाती हैं।
कफन में जिंदगी हँसकर जिसे लिटाती है।।



बहुत समय पहले की बात है, एक राजा था। उसका एक बड़ा साम्राज्य था। एक दिन उसे अपने नगर घूमने का विचार आया। उसने नगर भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह नगर भ्रमण के बाद लौट कर अपने महल आया तो उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे, वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। 149

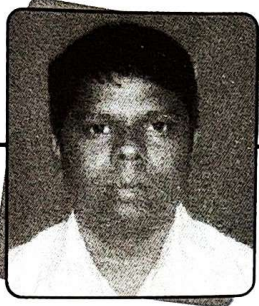
कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली। उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरीका मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बर्बादी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था, क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा, बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया। 136

यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं। 41



7/8/24

326



हँस हँस के ज़िंदगी में
गम को भूलता चल
आँसू भरे हैं ये जो पल
आज हैं, न रहेंगे कल।

गर आँसू आये तो, समझो
हार गया गम से तू
फ़क़त खुशियाँ ही खुशियाँ हों
ये न करना तू आरजू
बस कारवाँ में, हँसके चलता चल
आँसू भरे हैं ये जो पल
आज हैं, न रहेंगे कल।

रोता आया था तू जग में
पर रोते हुए मत जाना
हँस हँस के गम जो भेला
उसने ही जीवन को पहचाना
बस यूँ ही हर पल हँसता चल
आँसू भरे हैं ये जो पल
आज हैं, न रहेंगे कल।

तू ही नहीं अकेला जग में
जिसको मिला ये गम है
हर हँसते हुए चेहरे से पूछो

115

भेला उसने कितना गम है।
हर पल एक नया गम झेलता चल
आँसू भरे हैं ये जो पल
आज हैं, न रहेंगे कल।

गम से दूर ना भागो
ये एक सच्चा हमदम है
जो साथ दे दुख में
ऐसा साथी बहुत ही कम है
इस साथी से हर पल प्यार करता चल
आँसू भरे हैं ये जो पल
आज हैं, ना रहेंगे कल।

(62)



रुझ - 177





सुमन संगम
वरीय लेखाकार

एक बार भगवान् ने सोचा कि अपने भक्तों को खुद जाकर कर कोई तोहफा दिया जाए। वे अपने हाथ में एक सुन्दर आकर्षक तोहफा लेकर एक सामान्य व्यक्ति का भेष धारण कर पृथ्वी पर आये और अलग-अलग ओहदे, स्वभाव, हैसियत के लोगों के पास बारी बारी गए। सर्वप्रथम वे एक अमीर व्यक्ति के पास गए, जिसके पास बहुत संपत्ति थी, जो उसने गलत तरीके से अर्जित की थी। भगवान् ने जब उसे तोहफा देने की पेशकश की तो उसने पहले पहचान पूछा और तोहफे के बदले में क्या चाहिए, ये भी जानना चाहा। भगवान् ने कहा, तुम्हें मुझे जानने की जरूरत नहीं और इस तोहफे के बदले में मुझे कुछ नहीं चाहिए। यह एक भेंट है। यह सुनकर वह अमीर आदमी संशय में पड़ गया कि आखिर यह कौन है और क्यों मुझे बिना कीमत लिए कुछ देना चाहता है। कहीं यह मुझे नशे में लाकर मेरा पैसा लूटने तो नहीं आया, या कहीं आयकर वाला तो नहीं, जिसे मैं घर बुलाऊँ तो वह मेरे काले धन का आकलन कर बाद में छापा मारेगा। इस सोच के साथ उस व्यक्ति ने भगवान् को मना कर वापस लौटा दिया।

तत्पश्चात् भगवान् एक बड़े नेता के पास गए और यही पेशकश दोहराई। वह नेता अचंभित हुआ कि आज तक मैंने किसी का काम बिना स्वार्थ के नहीं किया तो यह कौन है जो मुझे बिना किसी अपेक्षा के तोहफा देना चाहता है। उसे डर लगा कि कहीं यह किसी आतंकवादी समूह का सदस्य तो नहीं जो मुझे विस्फोटक से मारने आया है, या कोई ऐसा जो मेरे किसी कुकृत्य का बदला लेने आया है इसी सोच के साथ उसने भी भगवान् को लौटा दिया।

भगवान् इसके बाद एक सरकारी कर्मचारी के पास गए। उससे भी बिना किसी मूल्य के तोहफा देने की बात। की उसने भी उसे लेने से मना कर दिया, यह सोच कर कि जरूर यह किसी निगरानी विभाग का सदस्य होगा जो मेरे रिश्वत लेने की प्रवृत्ति को जान कर मुझे रंगे हाथों पकड़ने आया है वरना आज के समय में कौन बिना मतलब के किसी को कुछ देता है।

फिर भगवान् एक गरीब किसान के पास गए जो अपनी छोटी सी जमीन पर खेती कर रहा था। उससे उन्होंने कहा कि आपके लिए मैं एक तोहफा लाया हूँ, बदले में मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। उस किसान ने सोचा कि पिछली बार भी एक बड़ा आदमी आया था और ऐसे ही मीठी बातें करके मुझसे मेरे

जमीन के कागज अपने नाम करा कर चला गया था। अब जो जमीन बची है, कहीं यह वो लेने तो नहीं आया है। अगर मैंने इसे लिया और इसने मुझसे घनिष्ठता बढ़ाई तो लेने के देने पड़ जायेंगे। यही सोच कर उसने भी भगवान् को मना कर दिया।

फिर भगवान् आगे चल कर एक आम इंसान के पास गए जो रास्ते में किसी काम से जा रहा था। भगवान् ने जब उसे भी वह पेशकश दोहराई तो उसने तुरंत गुस्से में कहा- मैं सब जानता हूँ, तुम्हारे जैसों को। मेरी बेटी पर तुम्हारी बुरी नजर है और मुझसे दोस्ती कर मेरे घर में घुसना चाहते हो। पहले भी लड़कों ने ऐसा प्रयास किया है। मैं तुम्हारे झांसे में नहीं आने वाला। चले जाओ यहाँ से, मुझे कोई तोहफा नहीं चाहिए।

इसके बाद भगवान् आगे बढे तो देखा कि उनका ही एक भव्य मंदिर आ गया। जहाँ बहुत सारे लोग हाथ जोड़े याचक के तौर पर खड़े थे और भगवान् से धन-धान्य की फरियाद कर रहे थे। भगवान् हैरान हो गए कि सब मुझसे मांगते हैं और जब मैं देने आया हूँ तो कोई लेने को तैयार नहीं है।

जब वे मंदिर से बाहर निकल थोड़ी दूर पहुंचे तो देखा कि एक दीनहीन बीमार व्यक्ति सड़क के किनारे गिरा पड़ा है और भीख मांग रहा है। भगवान् उसके पास जाकर कहे कि भाई मैं तुम्हारे लिए तोहफा लाया हूँ, बदले में मुझे कुछ नहीं चाहिए। क्या तुम इसे कुबूल करोगे। उसने हामी भर दी बिना कोई सवाल के। तो भगवान् ने पूछा कि क्या तुम्हें डर नहीं लगता, कहीं मैं कोई विस्फोटक लेकर आया हूँ और उसकी वजह से तुम्हारी जान चली जाए, या इसमें कोई ऐसा सामान हो जिसकी वजह से पुलिस तुम्हें पकड़ ले। या फिर मैं तुम्हारी जमीन हड़प लूँ सुनकर उस गरीब व्यक्ति ने कहा कि मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं जो आप मुझसे ले सकें इस तोहफे के बदले में न जमीन है न दौलत और न परिवार पुलिस भी पकड़ेगी तो खाना तो देगी मुझे जेल में और अगर मर गया तो सारे कष्ट से मुक्ति भी मिल जायेगी। दूसरी बात कि आज के जमाने में बिना किसी स्वार्थ के कोई किसी को कुछ नहीं देता, आप दे रहे हैं इसका मतलब आप जरूर भगवान के अवतार होंगे और भगवान् को मैं कैसे मना कर दूँ।

इस प्रकरण से भगवान् को यह बात समझ में आ गयी कि अब दुनिया में कोई किसी पर भरोसा यह नहीं करता, हर तरफ छल-कपट का ही दौर है। जिसके पास कुछ नहीं, बस वही निडर है। बाकी सब डरे हुए हैं।





मो० शादाब
पिता- आफताब अंसारी

|| पापा ||

जाते-जाते वो अपने जाने का गम दे गये,
सब बहार ले गए रone का मौसम दे गये।

ढूँढती है निगाह पर अब आप नजर नहीं आते पापा,
अपने होने का वो मुझे कैसा भ्रम दे गए।

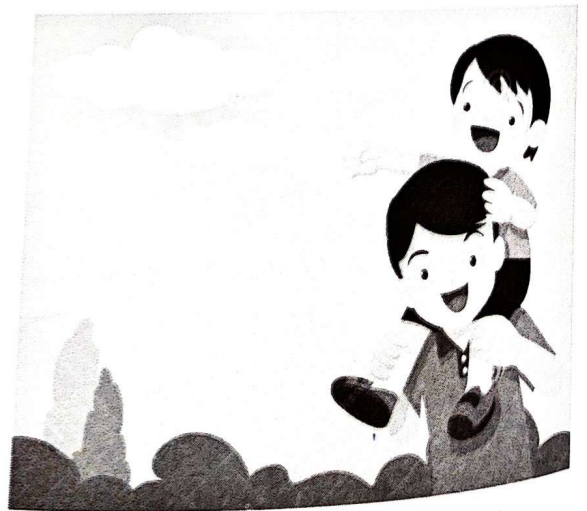
मुझे मेरे पापा की सूरत याद आती है;
वो तो नहीं रहे पर यादों का सितम दे गए।

एक अजीब सा सन्नाटा है आज-कल मेरे घर में,
घर की दर-ओ-दीवार को उदासी का पैगाम दे गए।

बदल गया है अब तासीर ज़िंदगी का,
आप क्या गए आँखों में मंजरे मातम दे गए।



85





स्वास्थ्य और स्वच्छता पूर्णतः मनोवैज्ञानिक और सामाजिक धारणा है। स्वस्थ रहने की चाह प्रत्येक मनुष्य को होती है, किन्तु स्वच्छ रहने की आदत सभी में नहीं होती। कुछ लोग स्वच्छता पसन्द करते हैं और कुछ लोग गन्दगी फैलाने का काम करते हैं। मनोवैज्ञानिक आधार पर इसकी समीक्षा की जाय तो यह ज्ञात होगा कि जो लोग गन्दगी फैलाते हैं वे दो तरीके के होते हैं, पहले अशिक्षित और अज्ञानी होते हैं। दूसरे प्रकार के लोग असामान्य प्रकृति के होते हैं। ऐसे लोग किसी न किसी तरह की मानसिक विकृति के शिकार होते हैं। हमें समाज के ऐसे लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का महत्वपूर्ण कार्य करना है।

समाज में जो लोग रहते हैं उनका अपना एक परिवेश होता है और सफाई ऐसी चीज है जो अनुकरण से भी सीखी जाती है। यह एक महत्वपूर्ण पहलू है कि व्यक्ति के सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वच्छता का स्तर भी अलग अलग होता है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि जो लोग सामाजिक और आर्थिक आधार पर उच्च दर्जा प्राप्त हैं, वे अधिक गन्दगी नहीं फैलाते, वहीं अभाव ग्रस्त और वंचित लोग गन्दगी फैलाने में अधिक योगदान देते हैं। शहरों में स्लम की बढ़ती संख्या और इससे उपजती कई तरह की बीमारियाँ इसका एक उदाहरण है। हालांकि यह सभी लोगों के साथ सही ही हो ऐसा जरूरी नहीं है। कुछ गरीब और वंचित परिवारों में भी स्वच्छता का स्तर काफी अधिक देखने को मिलता है। साथ ही इसके विपरीत अधिक संपन्न परिवारों में भी गन्दगी का अम्बार देखने को मिलता है। किन्तु यह भी सही है, जैसा कि एक बार पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधीजी ने भी कहा था कि जो वंचित और गरीब हैं उनसे पर्यावरण सुरक्षा और गन्दगी नहीं फैलाने की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? जो अपने जीवन के मूलभूत साधनों की प्राप्ति ही सही तरीके से नहीं कर पाते, उनसे वास्तव में गन्दगी के कारकों को रोकने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। किन्तु स्वच्छता ऐसी चीज है, जिसे करने के लिए आर्थिक मजबूती की आवश्यकता भी नहीं है। कोई भी व्यक्ति जो स्वच्छता के प्रति जागरूक है और जो इसे अपनाना चाहता है, वह बिना किसी आर्थिक कठिनाई के स्वच्छ रह सकता है। लेकिन इसके लिए उसको जागरूक होने के साथ इस तरह की प्रवृत्ति बढ़ाने के उपाय करने होंगे।

जहाँ भी गन्दगी फैलाने पर दण्डात्मक व्यवस्था है, वहाँ डर की वजह से लोग गन्दगी नहीं फैलाते और जहाँ ऐसी व्यवस्था नहीं है वहाँ गन्दगी का अम्बार लग जाता है। इसका एक साधारण उदाहरण दिल्ली मेट्रो रेल में देख सकते हैं। यहाँ थूकने पर 200 रुपये के जुर्माने के प्रावधान के साथ-

साथ इसकी कड़ी निगरानी भी है तो वहाँ कोई नहीं थूकता, लेकिन वहीं भारतीय रेलवे में इस तरह की निगरानी नहीं होने के कारण गन्दगी फैलाने से लोग परहेज नहीं करते। साथ ही स्वच्छता के साथ हम यदि अपने स्वास्थ्य की तुलना कर सकें तो भी हम इसके प्रति जागरूक होंगे। जब हम स्वच्छ रहते हैं, अपने परिवेश को गन्दा नहीं करते तो इससे रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया का विनाश होता है और बीमारी पैदा करने वाले जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। इससे हमारा स्वास्थ्य सही रहता है और हम बीमार कम पड़ते हैं। इस दिशा में विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में भी बताया गया था कि यदि भारत की आबादी प्रतिदिन खाना खाने के पहले साबुन से अपना हाथ धोना शुरू कर दे तो करीब 50 फीसदी बीमारियों को खत्म किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में वर्ष 2008 में स्टॉकहोम में आयोजित वार्षिक जल सप्ताह के दौरान लोगों को जागरूक करने के लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया गया था और प्रति वर्ष 15 अक्टूबर को ग्लोबल हैंड वाशिंग डे मनाया जाने लगा। आरम्भ में इसको स्कूली बच्चों के बीच 70 से अधिक देशों में चलाया गया। इसी तरह के अन्य कई अभियान जो स्वच्छता और साफ-सफाई से जुड़े हैं वह लोगों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से समय-समय पर चलाये जाते रहे हैं। इन सबका मकसद यही है कि लोगों की मानसिकता सफाई के प्रति बदले। यहाँ यह बात भी महत्वपूर्ण है कि आखिर क्यों सफाई जैसी चीज के लिए भी लोगों को प्रोत्साहित करना पड़ रहा है, जबकि यह स्वतः करने वाली चीज है। इसके पीछे व्यक्तिगत सोच और प्रेरणा काम करती है। कुछ लोग आलस की वजह से सफाई पर ध्यान नहीं दे पाते, कुछ लोग जागरूकता की कमी के कारण ऐसा करते हैं और कुछ लोग झूठी शान के लिए भी ऐसा करते हैं। अब जबकि यह सिद्ध है कि सफाई हमारे स्वयं के लिए, समाज के लिए और पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण है तो इसके प्रति लोगों को गम्भीर होना ही पड़ेगा। साथ ही जहाँ भी जागरूकता की कमी है वहाँ सरकार और सिविल सोसायटी को इसके लिए प्रेरक की भूमिका निभानी होगी। लोगों में जागरूकता और सफाई के महत्व के लिए सभी को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी, तभी एक स्वच्छ और विकसित समाज तथा स्वच्छ भारत का निर्माण सम्भव हो पायेगा।





नायला समरीन
पिता- आफताब अंसारी

||| मुस्कुराना धर्म है |||

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।

जिस वक़्त जीना ग़ैर-मुमकिन सा लगे,
उस वक़्त जीना इंसान का फर्ज है।

लाजिम लहर के साथ है तब खेलना,
जब हो समुंदर पर नशा तूफ़ान का।

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।

हो ही नहीं मंजिल कहीं जिस राह की,
उस राह चलना चाहिए संसार को।

जिस दर्द से सारी उमर रोते कटे,
उस दर्द को पाना है जरूरी प्यार को।

जिस चाह का हस्ती मिटाना नाम है,
उस चाह पर हस्ती मिटाना धर्म है।

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।



आदत पड़ी हो भूल जाने की जिसे,
हर दम उसी का नाम लेना हो हर साँस पर।

उसकी खबर मैं ही सफर सारा कटे,
जो हर नज़र से हर तरह हो बेखबर।

जिस आँख का आँखें चुराना काम हो,
उस आँख से आँखें मिलाना फर्ज है।

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना, ४५
उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।



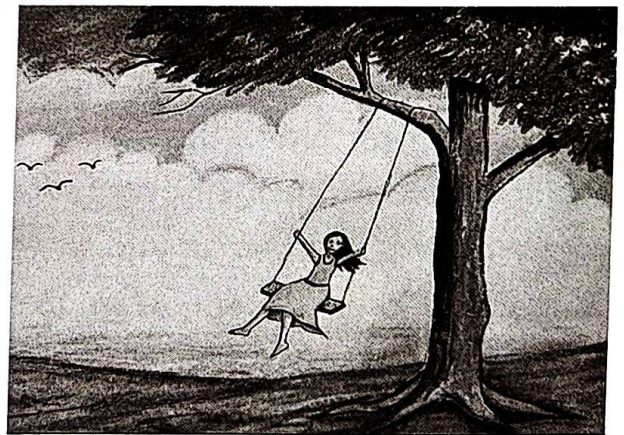


बनवारी सिंह
लेखाकार सह केयरटेकर

|| सवांनवां में न जबई ननदी ||

सवांनवां में न जबई ननदी
चाहे भईया आवश चाहे जाश हो
सवांनवां में न जबई ननदी
न जबई ननदी हे न जबई ननदी
सवांनवां में न जबई ननदी
सोने के गेरुआ गंगाजल पानी
चाहे भईया पैर धोवत जाहे जाश हो
सवांनवां में न जबई ननदी
सोने के थाली में भोजन परोसली
चाहे भईया खात चाहे जाश हो
सवांनवां में न जबई ननदी
न जबई ननदी हे न जबई ननदी
सवांनवां में न जबई ननदी
चुनी चुनी कलियाँ के सेजिया सजावली
चाहे भईया सोवश चाहे जाश हो
सवांनवां में न जबई ननदी
गावे बनवारी कजरी बनाई
सावन के महीना पवन करे सोर
जियरा रे झुमे जैसे बनवां नाचे मोर
सवांनवां में न जबई ननदी
चाहे भईया रहथ चाहे जाश हो
सवांनवां में न जबई ननदी

124





सूरज कुमार वर्मा
वरीय लेखाकार

मुझे लगभग 6 वर्ष से ज्यादा हो गये हैं, इस कार्यालय में आये हुए। इन वर्षों में मैंने कभी भी एल0टी0सी0/एच0टी0सी0 का उपभोग नहीं किया। जुलाई 2019 में मैंने अपने कार्यालय के कुछ सहकर्मियों से इस पर बात की, जिसपर मेरे अनुभाग के श्री अमित कुमार, वरीय लेखाकार एवं जी0ई0-03 अनुभाग के श्री दिवाकर कुमार, वरीय लेखाकार अपने-अपने परिवार के साथ गृह नगर रियायती यात्रा के बदले (HTC Conversion) में माँ वैष्णो देवी के दर्शन करने के लिए सहमति से जम्मू जाने का निश्चय किया। हमारे समूह में श्री दिवाकर जी सबसे अनुभवी, उत्साही एवं धैर्यवान सहकर्मी हैं, अतः हमने कार्यक्रम बनाने का जिम्मा उन्हें ही दिया। उन्होंने सहमति से 16 अगस्त को दिल्ली से जम्मू एवं 19 अगस्त को जम्मू से दिल्ली आने का कार्यक्रम तय किया। पटना से दिल्ली और दिल्ली से पटना आने-जाने का कार्यक्रम सभी के द्वारा अपने-अपने सहूलियत के हिसाब से तय करने का निश्चय किया गया। विदित हो कि मैंने शादी के बाद तुरंत पटना में लोन पर प्लैट खरीदा था, जिसके कारण मैं अपनी पत्नी को कहीं भी घुमाने नहीं ले जा सका था, सो मैंने सोचा कि मैं जम्मू के बहाने दिल्ली, आगरा, मथुरा और वृन्दावन भी घूम आऊँ। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए मैंने दिनांक-10 अगस्त को राजधानी एक्सप्रेस में अपने माता-पिता सहित पत्नी का भी टिकट बुक किया। बाकी लोग 11 अगस्त को पटना से दिल्ली तक टिकट बुक कराये। दिल्ली में ठहरने के लिए मैंने दिल्ली का Holiday Homes 5 दिनों के लिए और आगरा में भी 1 दिन के लिए Holiday Homes बुक किया। बाकी लोग अपने संबंधी/मित्र के यहाँ रुकने वाले थे। तय कार्यक्रम के अनुसार हमलोग 19 अगस्त को 3 बजे जम्मू से दिल्ली हवाई-यात्रा कर दिल्ली पहुँच रहे थे। उस दिन दिल्ली से पटना के लिए राजधानी एक्सप्रेस शाम 5 बजे की थी, हमने ट्रेन छूट जाने के डर से राजधानी एक्सप्रेस का टिकट बुक नहीं कराया। हमें राजधानी एक्सप्रेस के भाड़ा से 2000 (दो हजार) अधिक में हवाई जहाज का टिकट मिल रहा था, सो हमने समय की बचत और एक दिन दिल्ली में रुकना न पड़े इसके लिए हवाई जहाज का टिकट ही बुक कराया। दिवाकर जी को उस दिन दिल्ली में कुछ काम था, सो वो अगले दिन अर्थात् 20 अगस्त को राजधानी एक्सप्रेस में टिकट बुक कराये। इस तरह हम सभी का आने-जाने का टिकट बुक हो चुका था। सभी लोग पहली बार अपने-अपने परिवार के साथ कार्यालय के माध्यम से गृह नगर रियायती यात्रा के बदले (HTC Conversion) में कहीं घुमने जा रहे थे। इसके लिए हम सभी ने जरूरी नियमों का पालन करते हुए प्रशासन-III को सूचना एवं अग्रिम राशि के लिए आवेदन भी जमा करा दिये। साथ ही प्रशासन-II को भी अपने 10 दिनों के अर्जित अवकाश के समतुल्य राशि के वेतन भुगतान

हेतु आवेदन समर्पित किये। हम सभी ने अपने वरीय लेखा अधिकारी से दिनांक- 10/08/19 से 19/08/19 तक मुख्यालय छोड़ने की अनुमति एवं आवश्यक अवकाश भी स्वीकृत करा ली थी। जैसे-जैसे हमारी यात्रा शुरू करने की तिथि नजदीक आ रही थी, हमारी तैयारी उसी तरह बढ़ती जा रही थी। हमारी यात्रा के सभी सदस्य बहुत ही खुश थे। सभी आवश्यक सामान की सूची बना रहे थे एवं अपने परिवार के लिए कपड़ों की खरीदारी भी कर रहे थे। मैंने भी अपने एवं अपने परिवार के लिए पटना से आवश्यक सामानों एवं कपड़ों की खरीदारी की। ये सभी काम हमलोगों को करने में 15 से 20 दिन लग गये थे। अभी भी हमलोग के यात्रा शुरू होने में लगभग एक सप्ताह बचा था। इसी बीच 3 अगस्त के दिन दैनिक भास्कर में छपे “कश्मीर में अमरनाथ यात्रा पर रोक, सभी यात्री वापस बुलाये गये” के समाचार ने मुझे एकदम चौंका दिया। मैंने एक ही सांस में पूरा समाचार पढ़ लिया, जिससे मुझे पता चला कि एक से दो दिन में जम्मू-कश्मीर में कुछ ऐतिहासिक घटना घटित होने वाली है, सुरक्षा कारणों से वहाँ हजारों की संख्या में सैनिक बल भी तैनात कर दिये गये। इस समाचार से हमलोगों के यात्रा की तैयारी अचानक ठहर सी गई। हम सभी लगातार टी0वी0 पर न्यूज/समाचार देखने लगे और जम्मू-कश्मीर में घटनेवाली घटना पर नजर रखने लगे। 05 अगस्त को जो समाचार सामने आया, उससे हमें एक तरफ बहुत खुशी मिली तो दूसरी तरफ हमारी यात्रा की तैयारी पर विराम सा लग गया। उस दिन हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 एवं 35A को पूर्णतः समाप्त कर दो नये केन्द्र शासित प्रदेश बनाने का निर्णय लिया। इस समाचार से हम सभी बहुत खुश हुए परंतु यात्रा को लेकर हमारे मन में अनेकानेक विचार उत्पन्न होने लगे। सुरक्षा कारणों से सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर में कर्फ्यू लगा दिया गया और सरकार द्वारा हिदायत जारी की गई। हमारे सभी शुभचिंतकों संबंधी/मित्रों द्वारा हमारी यात्रा स्थगित करने का सुझाव दिया गया। अंततः दिनांक 07 अगस्त को हम सभी ने अपनी यात्रा स्थगित करने का फैसला लिया और अपने-अपने टिकट रद्द करवा दिये। इसकी सूचना हमने प्रशासन-III और प्रशासन-II को भी दिया, ताकि हमारे पक्ष में किये गये कार्रवाई को निरस्त किया जा सके। हालांकि जम्मू में स्थिति संतोषजनक ही थी, फिर भी हालात बेहतर होने तक हमने वहाँ न जाने का फैसला लिया। हम सभी उस दिन से लगातार टीवी पर और समाचार पत्रों के माध्यम से जम्मू-कश्मीर में घटित घटना पर नजर रखे हुए हैं ताकि हालात सामान्य होने पर हम इस अधूरी यात्रा को पूरी कर सकें। हो सकता है जब तक यह वृत्तांत आपके हाथों में होगी तब तक हमलोगों की यह अधूरी यात्रा पूरी हो चुकी हो।





जय प्रकाश
लेखा अधिकारी

|| आशीष और कामना ||

उच्च विद्यालय, डालमियॉनगर (राज्य-बिहार, जिला-रोहतास) में नामांकन के पश्चात् मैं विद्यालय आने जाने के क्रम में आवासीय घरों/दीवारों पर लिखित कई समाज/आत्म सुधार संबंधी उक्तियों को पढ़ते हुए उन्हें आत्मसात करने का प्रयास करता हुआ आगे बढ़ जाया करता था। ये पंक्तियाँ थी:-

पाप से बचो-भगवान महावीर
काम और क्रोध से बचो-भगवान महावीर
असत्य से बचो-भगवान महावीर

इन उक्तियों में से जो मुझे सर्वाधिक आकर्षित एवं मनन करने के लिए विवश करती थी, वह थी-
कामना मनुष्य के कष्टों का कारण है-भगवान महावीर

अर्थात्, कष्टों से मुक्ति चाहते हो तो जीवन में कामना रहित रहो। क्या यह संभव है? जैन गुरु की यह पंक्ति आज भी एक रहस्य की तरह मेरे अन्तर्मन को झकझोरती है।

गर्भावस्था में एक माँ अपने उदर पर कर-कमलो का मृदुल स्पर्श करते हुए कामना करती है- ईश्वर, मेरे उदरस्थ शिशु की रक्षा करना।

नवजात शिशु के प्रति माता-पिता, सगे-संबंधियों की यही कामना होती है- जन्म लेने वाला शिशु चिरंजीवी रहे, सुखी रहे, स्वस्थ रहे।

अर्थात्, जब जीवन का प्रारंभ ही कामना से हो तो जीवन को कामना से परे कैसे किया जा सकता है? फिर यह मनुष्य के जीवन के लिए कष्ट का कारण कैसे हो सकता है?

परन्तु आज दिनांक 2 जनवरी, 2019 को मुझे यह अहसास हुआ कि क्यों कामना मनुष्य के कष्टों का कारण है, क्योंकि इसी दिन आशीष की जिंदगी मौत से हार गई थी। असामयिक काल कवलित हुआ आशीष से 'आशीष' का संरक्षण छिन चुका था। 'आशीष' अर्थात्

प्रभु की असीम अनुकम्पा-Limitless Compassion of God

प्रभु का आशीष एवं सुरक्षा -God's bliss & protection

A man with the metaphor of Ashish himself got bereaved of ashish, the bliss.
Fragrant but nipped in the bud. Full of human qualities. Died in harness.

क्या इस धरा का कोई भी जीव है जो 'आशीष' के अदृश्य संरक्षण के बगैर जीना पसंद करेगा? शायद मैं तो नहीं क्योंकि यह निर्विवादित सत्य है कि जब 'आशीष' आपके साथ हो तो अन्य की कामना अनुशांगिक मात्र रह जाते हैं। परन्तु उक्त तिथि को मैं विचलित था, हतप्रभ एवं अवाक था। शोक सभा में अश्रुपूर्ण नेत्रों के साथ स्मृतिशेष आशीष के छायाचित्र को देखता हुआ शोकातिरेक में विह्वल होता हुआ खुद को असहाय एवं असुरक्षित महसूस कर रहा था। आखें निर्निमेष, गला रुद्ध, हृदय स्पंदनरहित और मन भावुक हो रहा था। जीजिविशा के विश्वास को गहरा आघात पहुँचा था। लग रहा था गोया आशीष का छाया चित्र बोल रहा हो

कि अब अपना और पराया क्या, आबाद रहें रुकने वाले, हम स्वयं बंधे थे और स्वयं ही अपना बंधन तोड़ चले।

आशीष का साथ हमें 31.01.2011 को प्राप्त हुआ था। उसका साथ हमें सुकून देता था। आशीष का व्यक्तित्व निराला था। वह सदैव आत्मीयता एवं अपनत्व का बोध कराता था। सच कहूँ तो मान-अभिमान एवं झंझट से परे होकर जीना कोई आशीष से सीख सकता था। उसकी निश्छल हंसी हृदय के तारों को स्पंदित एवं झंकृत करती थी। वस्तुतः बहुत अल्प समय में वह जीवन के विभिन्न परिस्थितियों में निर्विकार भाव से जीने की कला सीख दे गया।

तो क्या आशीष का भौतिक अस्तित्व वापस लेकर मुझे 'आशीष' से वंचित किया जा सकता है? कदापि नहीं। गीता में भगवान कृष्ण द्वारा पार्थ को दिया गया अमर संदेश स्मारित होता है कि

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।

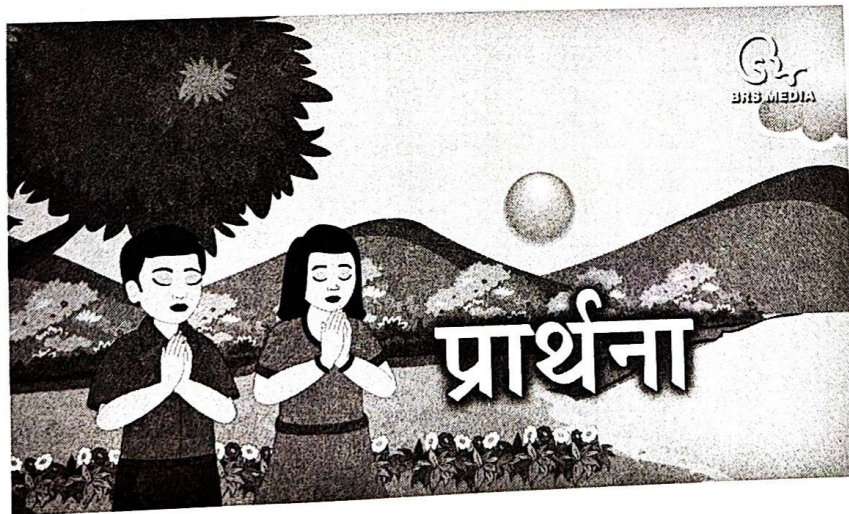
न चैनं क्लेदयन्तापो न शोशयति मारुतः।

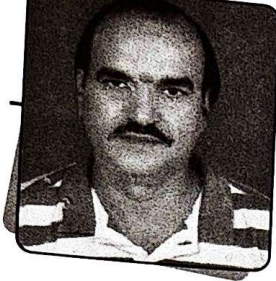
आज भी आशीष की आत्मा का मेरे साथ होने की अनुभूति होती है। आज भी किसी असहज परिस्थिति में उसकी आवाज मेरे इर्द-गिर्द गूंजती है। उसकी मृदुल-सरस वाणी स्वतः मेरे श्रवण पटल पर उभरकर मुझे भाव विभोर करती है:-

‘भैया, पुराना अभिलेख (Old Record) भवन में अकेले मत बैठा कीजिये क्योंकि यहाँ नकारात्मक तत्वों का वास होता है’।

आशीष का मेरे साथ होने की कामना से चाहे वह अदृश्य स्वरूप में ही क्यों न हो, मैं स्वयं को मुक्त करना नहीं चाहता। इस कामना जनित कष्ट को मैं निर्विकार भाव से आत्मार्पित करता हूँ।

(अपने सहकर्मी अनुज दिवंगत आशीष कुमार, भूतपूर्व सहायक लेखा अधिकारी की स्मृति में)

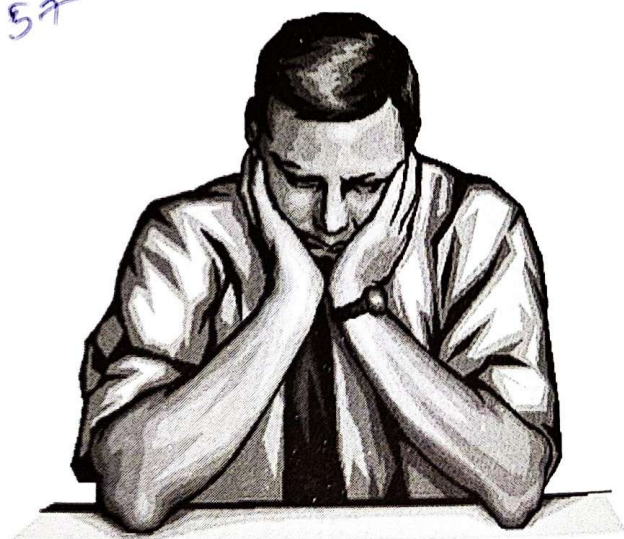




यूँ तो, भौतिकता में जी रहा हूँ मगर,
तेरे बिन, ये दुनिया विरानी लगती है,
वो बीते, लम्हे याद करता हूँ जब,
ये संसार सुहानी लगती है।
संघर्ष में गुजरे हमारे पल,
मन-मस्तिष्क को झंकृत करता है,
अभावों व कष्टों से घिरी थी, ज़िंदगी मगर,
फिर भी मनभावन लगती थी। 49

यूँ तो सबकुछ पास है, मगर
तेरे बिन, ये दुनिया विरानी लगती है।
तुम जहाँ कहीं भी हो, मगर मेरे मंदिर में बसेरा है,
जीवन का शेष बचा है, जो उसका तुम एक सहारा हो,
इन अश्रुपूरिता नयनों में बस याद तुम्हारी आती है।
यूँ तो सबकुछ पास है, मगर
तेरे बिन, ये दुनिया विरानी लगती है। 50

जाने-अनजाने में जो भूल हुई,
उसका पश्चाताप मैं करता हूँ,
हे पुण्यात्मा, हे श्रेष्ठात्मा,
यह तुझसे दुहाई करता हूँ।
सन चौरासी में जब तेरा सानिध्य मिला,



यह जीवन धन्य हुआ मेरा,
प्रगति शिखर पर प्रशस्त हुआ,
पीछे मुड़कर देखा ही नहीं, मगर
अब ये शाम अनजानी लगती है।

48

यूँ तो सबकुछ पास है, मगर,
तेरे बिन, ये दुनिया विरानी लगती है।
तुम्हारी याद में कवि आँसू बहाता है,
अतीतों में बिताये पल को याद करता है।
इस जहाँ और जहाँ से परे,
तुम जहाँ कहीं भी हो मगर,
तेरी याद मुझे सताती है।

45

यूँ तो सबकुछ पास है, मगर,
तेरे बिन, ये दुनिया विरानी लगती है।
हे ! परम श्रेष्ठी, हे ! पुण्यात्मा,
मेरे गुलशन को गुलजार करो,
जब भी मैं तन्हा होता हूँ,
तो साथ में गुजरे पल,
की याद मुझे रुलाती है।

38

यूँ तो सबकुछ पास है, मगर,
तेरे बिन, ये दुनिया विरानी लगती है।

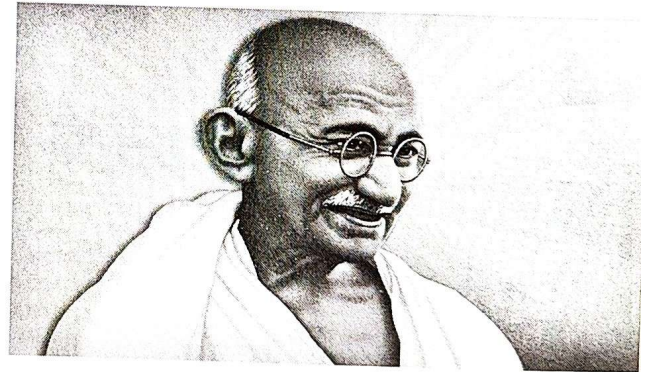
13





उचित दिशा का बोध नहीं था
खड़ा कहीं से आकर!
लक्ष्यपहुँच की मन में इच्छा
इस जीवन को पाकर!!
सफल नहीं जो इस जीवन में
मूल्यहीन मर जाता!
यही सोच इस मन में आई
सोचा मैं कुछ पाता!!
सोच रहा था मैं अनबुझ-सा
उचित ज्ञान हो मुझमें!
उसी राह से मैं चल पाऊँ
लक्ष्य सुनिश्चित जिसमें!!
इस उधेड़बुन में ही पड़कर
कितना वक्त बिताऊँ!
सोच बनी सद्गुरु को पाऊँ
उनसे मिलने जाऊँ!!
कृपा मिली तब मैं बड़भागी
ज्ञानलोक में आकर!
इस जीवन की सार्थकता भी
सद्गुरु को ही पाकर!!
भटक सकूँ मत दिशाहीन हो
ऐसा कुछ कर जाऊँ! 104
सद्गुरु पाकर सीख सदा ही
आगे भी ले पाऊँ!!
कलिगाथा में सुयशगान हो
ऐसा जोर लगाऊँ!
भय-संशय से मुक्त धरा हो
यह संयोग बनाऊँ!!
धन्य हुई जीवन की सरिता
ज्ञानसिंधु में आकर!
बाधाओं से लड़कर आगे
सद्गुरु को ही पाकर!!
सद्गुरु ने जो दिशा दिखाई
उसी दिशा में जाऊँ!
सपना जो सद्गुरु ने देखा
पूरा भी कर पाऊँ!!
रुक मत जाना अरी लेखनी
भवबाधा को पाकर!

चलते रहना, चलते रहना
 सत्यमार्ग में आकर!!
 सद्गुरु की बातें इस मन से
 इस युग को दे पाऊँ!
 स्नेहामृतसिंचित मनबगिया
 ऐसा ही कर जाऊँ!! 89
 स्नेहिल मन की स्वरलहरी हो
 सद्गुरुवाणी पाकर!
 भटके मन को राह दिखाना
 उचित समय में आकर!!
 अरी लेखनी निर्मल रहना
 ज्ञानामृत बरसाना!
 इस मन की कविता से मिलना
 इसे नहीं तरसाना!!
 सद्गुरु की महिमा गूंजित हो
 गीत वही गा पाऊँ!
 दुखी न हो कोई भी मुझसे
 चमत्कार कर पाऊँ!!
 इस मन में सद्गुरु की वाणी
 धन्य हुआ मैं पाकर!
 धन्या ही तूँ अरी लेखनी
 काव्यमार्ग में आकर!!
 सद्गुरु आगे शीश झुकाऊँ
 उनकी महिमा गाऊँ!
 सद्गुरु झलकें आखर में
 उचित मार्ग से जाऊँ!!
 अंतकाल में अटलसत्य ही
 याद इसे रख पाऊँ!
 जीवन जीऊँ उचित ढंग से
 छोड़ उचित ही जाऊँ!!
 सद्गुरु की वाणी को मन में
 अंत-अंत तक पाऊँ!
 ईश्वर से यह मनोकामना
 स्नेह बाँट मिट जाऊँ!!



116

220
89
309





स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर उप-महालेखाकार (ले० एवं हक०)
झंडोत्तोलन करने के बाद।



स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर उप-महालेखाकार (ले० एवं हक०)
सलामी गारद का निरीक्षण करते हुए।

